प्रेम पत्र

प्यारे जग्गू भैया

आज सवेरे मैं टेलीफोन एक्सचेंज में बैठा टेलीफोन आपरेटर से गप्पें हांक रहा था कि वह बहुत हड़बड़ाई और कुछ का कुछ बोलने लगी, मेरे मुँह पर हाथ रख दिया और कन-टोपे को दूसरे हाथ से कान के साथ जोर से दबा दिया जैसे कि वैस्ट-इंडीज से क्रिकेट कमेंटरी आ रही हो और सुनाई न पड़ रही हो, मैं हैरान हूँ कि अचानक इसको क्या सूझी। तीन मिनट बाद ही उसके चेहरे का रंग बदल गया और वह मुस्कुराने लगी, मैंने जब उससे पूछा, "कहो क्या बात है?" तो जो उसने हंसना शुरु किया तो उसकी हँसी रोके न रुकी। बड़ी मुश्किल से इतना भर कह पाई, 'एक कहता है बधाई क्यों दूँ? दूसरे को अपशकुन नजर आ रहे हैं और तीसरा टेलीफोन के तार जोड़े बैठा है। कमाल है एक अकेली जान ने सबको नचा रखा है।"

थोड़ी-थोड़ी बात मेरी समझ में आई, शायद आपकी भी समझ में आ गई होगी। आपसे जनता को ऐसी ही उम्मीद थी। आखिरकार जनता वालों ने ही तो सुरेश भैया का भांडा फोड़ा था। फिर जैगुअर डील का ढोल-ताशा भी उन्होंने ही पीटा और अब तो आपका उस पार्टी में रहना हराम हो ही गया है। पर आपको फिकर करने की जरुरत नहीं है। आपके कहने से चिकमगलूर की बहादुर जनता ने सन् ७१ की रायबरेली को दोहरा दिया है और आपकी पुरानी रहनुमा आपकी तकलीफों को देखते हुये आपको बचाने फिर से लोक-सभा में आ ही गई हैं। वे प्रधान मंत्री से केवल ३० फुट दूर रह गई हैं। शायद आप तो उनसे इससे भी कम दूर होंगे। और फिर टेलीफोन से तो आपका कनेक्शन जुड़ ही चुका है। बधाई श्रीमती गांधी की बजाय आपको दी जानी चाहिये। आप तो सदा ही बधाई के पात्र रहें हैं।

काश! मैं भी ऐसी राजनीति खेल पाता। फिर भी मेरी प्रार्थना है कि कृपा करके मुझे आप अपना चेला बनाना स्वीकार कर लें।

आपका होने वाला चेला

—चिल्ली

मुख्य पृष्ठ पर

कुछ तो अक्ल से काम लो
और मत मानो कभी हार
खराब क्रीज पतलून की
मत उतारो मेरे यार
खड़े खड़े प्रेस करवा लो
बात है मेरी सच
एक तरफ उतारो भैय्या
और समय जायेगा बच।

दीवाना
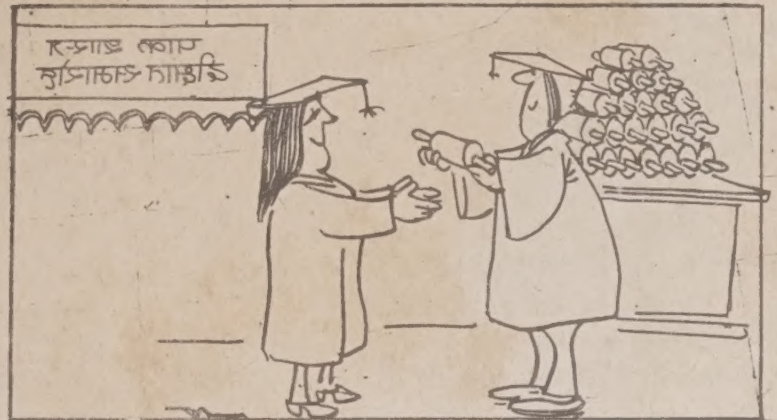
अंक : ३८, १६ नवम्बर से २२ नवम्बर १९७८ तक
वर्ष : १४

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
उपसम्पादकः कृष्ण शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

चन्दे
छमाही: २५ रु०
वार्षिक: ४८ रु०
द्विवार्षिक: ९५ रु०

लेखकों से

निवेदन है कि वह हमें हास्यप्रद, मौलिक एवं अप्रकाशित लघु कथायें लिखकर भेजें। हर प्रकाशित कथा पर 15 रु० प्रति पेज पारिश्रमिक दिया जायेगा। रचना के साथ स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना के लिए पर्याप्त डाक टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा संलग्न करना न भूलें। —सं०

काका के कारतूस

प्रश्न 'दीवाना' के दीवानों के उत्तर काका हाथरसी के

नरायान शर्मा 'सोच', नाहरकटिया (असम)

प्र० : भगवान कण-कण में मौजूद हैं तो लोग मन्दिरों में क्यों जाते हैं ?

उ० : कण-कण में कण सूक्ष्म हैं, नहीं दीखते ईश ।
मन्दिर-मूरत दर्शनी, झुक जाता है शीश ।।

कमल श्रीवास्तव, लखनऊ

प्र० : तारे रात में ही निकलते हैं दिन में क्यों नहीं ?

उ० : तारे रहते हर समय, आसमान के मांहि ।
अन्धकार में चमकते, दिन में दीखत नांहि ।।

सिखमल आहूजा, बालोद (म० प्र०)

प्र० : काकाजी आपने शादी कितनी उम्र में की थी ?

उ० : ताज पहिन दूल्हा बने कृपा करी जगदीश ।
काकी सोलह साल की, उम्र हमारी बीस ।।

शेरसिंह अग्रवाल जेरुसलेम (इसराइल)

प्र० : आपको जीवन में सबसे ज्यादा दुख या सुख किस चीज से मिला ?

उ० : रोते देखा किसी को, पहुंचा दिल को दुक्ख ।
हँसते-खिलते देखकर, मिला हृदय को सुक्ख ।।

रोमी भसीन, गाजियाबाद (उ० प्र०)

प्र० : पिलाना फर्ज था, कुछ भी पिला दिया होता ।
शराब कम थी तो, पानी मिला दिया होता ।।

उ० : बताई आपने तरकीब जो, यह काम है जाली ।
मिलावट का मुकदमा, हम पे चल जाता जनाब आली ।।

अनिल मनोज, लखीमपुर (खीरी)

प्र० : जब भी मैं करता हूं कुछ काम ।
जबां पर आ जाता क्यों काका कवि का नाम ।।

उ० : नाम मजे से लीजिये, जब हो अच्छा काम ।
बुरा काम जब करो तो, मत लो मेरा नाम ।।

विपिन कुमार गुप्ता, अन्धामुगल, दिल्ली

प्र० : दिल ही दिल में किसी से प्यार हो गया है ।
जानते नहीं फिर भी वह यार हो गया है ।।

उ० : बिना खर्च के प्यार का, अच्छा है यह ढंग ।
हल्दी लगे न फिटकरी, आये अच्छा रंग ।।

आनन्द कुमार तजवानी, इन्दौर

प्र० : लड़कियां निगाहें झुका कर क्यों चलती हैं ?

ना जाने किस क्रूर की, क्रूर दृष्टि पड़ जाय ।।

भूपेश कुमार पांडे, जगतपुरा, मंदसौर

प्र० : बुद्धि बड़ी है या धन ?

उ० : दीख रहा प्रत्यक्ष यह, सत्य सेंट-परसेंट ।
धनपति की दूकान में, बुद्धिमान सरवेंट ।।

जसबीर सिंह बिंद्रा, रंजीत नगर, कानपुर

प्र० : दुनिया में सबसे खूबसूरत चीज क्या है ?

उ० : पैमाना सौंदर्य का, क्या है कहा न जाय ।
वह सुन्दर उसके लिए, जिसके जो मन भाय ।।

दिनेश सुरेका, कलकत्ता-७

प्र० : काका जी, दाढ़ी के बाल चिपकाने के लिए टेप भे[ज]ूं ?

उ० : होती अस्थायी अगर, चिपका लेते टेप ।
जमी हुई में क्यों करें, नाहक हस्तक्षेप ।।

प्रदीप रंगीला, दिल्ली-३५

प्र० : मेरी उम्र चौबीस साल है, काकी को क्या कहकर पु[कारूं]
मां, बहिन या काकी ?

उ० : नाते-रिश्ते छुट गए, भूल गए सब कोइ ।
काकी, काकी ही रहे, जब तक जीवन होइ ।।

सुरेन्द्र प्रजापत 'राही', लालगढ़ (बीकानेर)

प्र० : विश्वास की सीमा कहां व कैसे समाप्त हो जाती है

उ० : घड़ी देखते ही रहे, लगी रात-भर आस ।
पास न आए सुबह तक, टूट गया विश्वास ।।

जगजीत सिंह राणा, त्रिनगर, दिल्ली-३५

प्र० : काकी जी का पूरा नाम दीवानों को बताने की कृपा [करें]

उ० : नाम बताएंगे नहीं, लगता हमको डर्र ।
लड़के सब लिखने लगें, उनको लवलैटर्र ।।

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

काका के कारतूस
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

दैनिक जीवन की गेंदबाजी और दीवाने

टैक्नीक उन गेंदों को खेलने के

हमारा दैनिक जीवन एक क्रिकेट मंच है आप हम या बैटिंग करते होते या बालिंग या फील्डिंग। ऐसे में क्रिकेट के तकनीकों की जानकारी जरूरी है।

...न स्विंगर

...ली आपसे पिक्चर दिखाने की फर्माइश करे तो समझें कि ...नैंग पिचपर वह इन स्विंग करती स्पिन गेंद फेंक रही है। ...ी गेंद को स्वीप करने की कोशिश न करें। कैच आऊट ...े का खतरा है। बाल की स्पिन को मारते हुये बॉलर की ...फ बिना रन बनाये हलके बैट से लुढ़का दें यानि फर्माइश मान लें।

गुगली

यदि नौकर तनख्वाह में बढ़ोतरी की मांग कर रहा है तो समझिये कि वह गुगली फेंक रहा है। ऐसी गेंद को बिन रन बनाये डिफेन्सिव बैट से खेलिये। यानि साफ जवाब मत दें। देखेंगे या अगले महीने सोचेंगे कह कर टाल दें।

...ज बॉल

...ा अगर इस बहाने कि उसने होमवर्क नहीं किया है टीचर ...गा स्कूल न जाना चाहे तो समझिये उसने फुल टॉस आपको ...ा है। ऐसी बॉल को खूब सजा मिलनी चाहिये। सीधा ऐसा ...का मारिये कि बॉल स्कूल की छत पर जा गिरे यानि साहब-...े को कान पकड़ कर स्कूल के रास्ते पर रवाना करें।

डैड पिच

यदि दहेज की अधिक मांग के कारण आपकी शादी तय नहीं हो पा रही है तो समझिये कि पिच डैड है, न फॉस्ट बॉलिंग काम कर रही है न स्पिन। बेट्स मैन कोई आऊट नहीं हो रहा है। ठंड (पैसों के बिना कड़की) के कारण बॉलर से ठीक तरह नहीं पकड़ी जा रही है। ऐसे में खूब फुलटॉस फेंक कर बैट्समैन को स्टम्प आऊट करना ही एकमात्र रास्ता है। यानि आप स्वयं किसी लड़के को अपने जाल में फंसा विवाह रजिस्ट्रार के दफ्तर में उसे स्टम्प आऊट करें।

सबस्टीच्यूट फील्डर

यदि बीबी कहे कि उसकी तबियत ठीक नहीं रहती वह अपनी मां को बुलाना चाहती है तो समझिये कि फील्डर रिटायर्ड हर्ट यानि अस्वस्थता के कारण पैविलियन लौटना चाहती है और अपनी जगह सब्स्टीच्यूट फील्डर लगाना चाहती है। आप इसमें टांग न अड़ायें। क्योंकि नियमों में सब्स्टीच्यूट फील्डर की व्यवस्था है। हां, वह क्लोज इन फील्डिंग नहीं कर सकती यानि आपसे तनख्वाह का हिसाब नहीं मांग सकती।

यार्कर

यदि बाप दहेज के लालच में आपकी शादी मोटी लड़की से करवाना चाहता है तो समझिये कि डकी ड्राप गेंद फेंक रहा है यदि आपने इस गेंद को नहीं मारा तो सीधे विकेटों पर गिरेगी और आपके अरमानों के इनिंग्ज की समाप्ति हो जा

मिस फील्डिंग

यदि अखबार वाला गलती से पड़ोसी का अखबार आपके आंगन में फेंक जाये तो समझिये कि फील्डर ने ओवर थ्रो कर मिस फील्डिंग की है। इस पर खूब रन बनाइये अर्थात् अखबार को चाट जाइये। खबरों का आनन्द लीजिए, यह आपकी गलती नहीं है।

एल बी डब्ल्यू
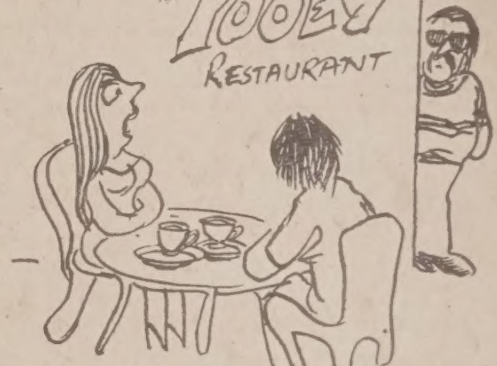
यदि प्रेमिका का भाई आपको बहन के साथ रेस्टोरेन्ट में ले तो समझिये आप एल. बी. डब्ल्यू. (लैग बिफोर वेटर) गए हैं, कोई शक नहीं है। आप क्रीज छोड़कर सीधे पैविलि यानि अपने घर जाइये। आप दोनों के रोमांस की साझे का निश्चित ही अंत हो गया है।

यार्कर

लड़का अगर कहे कि प्रेम विवाह करने जा रहा है तो समझिये कि वह आपको यार्क करने की कोशिश कर रहा है ऐसी गेंद को बल्ले के नीचे से खोद कर निकालिये वर्ना सीधे क्लीन बोल्ड कर देगी। यानि भावी समधी की हजामत यानि क्लीन शेव करने की जो योजना आप बनाते रहे हैं उसकी छुट्टी हो जायेगी।

बम्पर
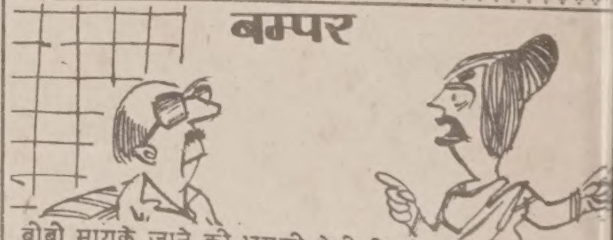
बीबी मायके जाने की धमकी देती है तो समझिये कि वह बा फेंक रही है। बम्पर को सावधानी से खेलना चाहिये। ज्यादा ऊंची उठ रही है तो डक कीजिये। बेकार बल्ला करने के लालच में घुमायें तो आप आऊट हो सकते हैं चोट सकती है। बीबी इस समय गुस्से में है वह बेलन का उप करे तो आपकी वही हालत हो सकती है जो मोहिन्दर अमर की लौहर टैस्ट में हुयी थी।

अच्छी खबर बुरी खबर
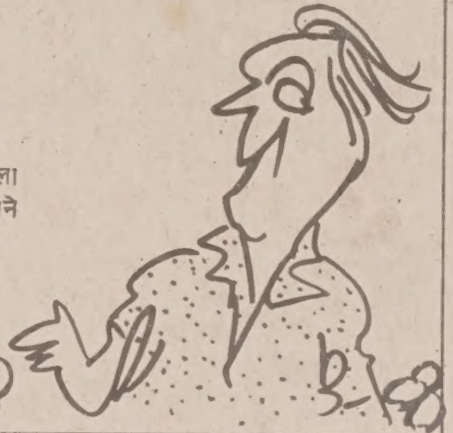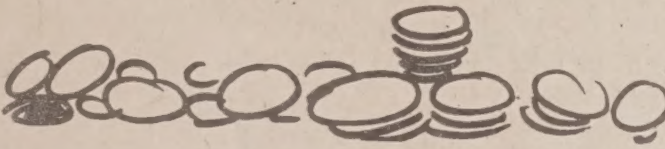
फड़कती खबर यह है कि
मेरी प्रेमिका रोज मुझे पिक्चर दिखाने ले जाती है
और डूब मरने वाली खबर यह है
कि सिनेमा घर का गेट कीपर भी उसका फ्रैंड है। वह दोनों पिक्चर देखते रहते हैं और मुझे गेट कीपर की जगह खड़ा रहना पड़ता है।
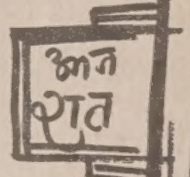
प्रसन्न करने वाली बात यह है
कि मेरी पत्नी ने कहानियां और कवितायें लिखना शुरू किया है
खेद प्रकट करवाने वाली बात यह है
कि अब मेरी शामत आई। मैं कविता-कहानियां प्रकाशित करने वाली पत्रिका का सम्पादक हूँ।
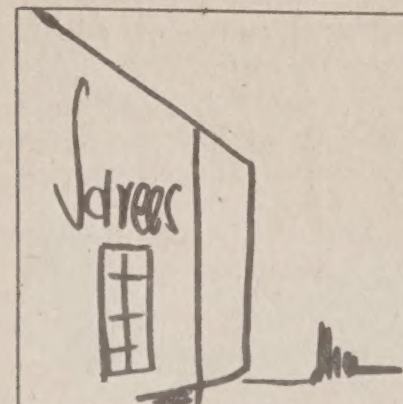
खुशखबरी यह है कि
मेरी सहेली के ससुर ने बहुत बड़ा साड़ी स्टोर खोला है, अपनी ही दुकान हो गई
घाटे वाली खबर यह है
कि सहेली का ससुर इतना बेशर्म है कि मैं उसके घर जो चाय पानी पीती हूं। उसकी कीमत भी मेरी खरीदी साड़ी में डाल कर वह वसूल कर लेता है।

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

...खन्ना, "पप्पू"—लुधियाना : अंकल ...दि जनता पार्टी पर कोई फिल्म बनाई ...तो आप कौन सा रोल करना पसंद ...?

...थाली के बैंगन का या बे पेंदे के लोटे ...र उस फिल्म में गाना गायेंगे।
...हमसे जरा करे कोई घात,
...चलते देखे मुक्के लात
...हमें कहे लल्लू पंजू,
...भला है यह किसकी औकात
...चरण सिंह या भाई देसाई,
...कोई किसी को भी दे मात,
...न देखें हम जात और पात,
...अपनी तो बस इतनी बात,
...जहां पे देखें तवा परात,
...वहीं बितायें सारी रात।

...द्र मुरारका—बोंकुडा : चाचा जी, ...एक लाख रुपया मिला है। मैं ....?

...मैं आपको देना चाहता हूं? यह ख्याल ...ो हम खुशी के मारे बेहोश हो गये। ... ने हमें जूता सुंघाया तो होश आया ...खने वालों ने बाद में बताया कि उसने ...सूंघाया ही नहीं, जूता मारा भी था। ...आपका पूरा पत्र पढ़ा तो उसमें लिखा ... आपको इस आशा से पत्र लिख रहा ...आप इस एक लाख रुपये को खर्च ...ा कोई दीवाना तरीका बतायेंगे।" ...क दीवाना तरीका तो यह है कि इसे ...क बड़े नोटों की शक्ल में अपने पास ... इस सरकार का दीवाला जिस तेजी ...रहा है, उस हिसाब से हो सकता है ...जार और दस हजार के बड़े नोटों ...सौ-सौ के नोट भी बन्द हो जाएं। ...सा हुआ तो रुपये आप से आप ही ...जाएंगे। सड़े हुये अंडे और टमाटरों ... कर उनका स्टाक कर लीजिये। ...ुर में इन्दिरा गांधी के विरुद्ध प्रचार ...तो "भाड़ के वर्कर जा रहे हैं, चुनाव ... के बाद उनकी वापसी पर उनके ... लिये यह स्टाक फटाफट बिक जाएगा। फिर दिल्ली आकर माडल टाउन में एक कोठी लीजिए उस कोठी के बेसमैंट में सट्टा खेलने के लिए चने का स्टाक कीजिए और ब्लैक करने के लिए सीमेंट की बोरियां भर लीजिए। भगवान ने चाहा और सरकार ने भगवान की सहायता की तो अगले साल फिर यमुना में बाढ़ आएगी। आपकी कोठी ऊपर की छत तक पानी में डूब जाएगी। सीमेंट जम कर पत्थर हो जाएगा, चना फूल कर कोठी की दीवारें फाड़ देगा। और आप गला फाड़ कर चिल्लाते रह जाएंगे। आखिर में रुपया खर्च करने और जल्दी से जल्दी ठिकाने लगाने का दीवाना उपाय यह है कि एक लाख रुपये का बन्डल बना कर किसी जरूरतमंद की खिड़की में फेंक दीजिये। आप की जानकारी के लिए बता दें कि हम अपने घर के पिछवाड़े की खिड़की हमेशा खुली रखते हैं। (भगवान करे दीवाना के इस अंक को कोई चोर न पढ़ रहा हो।)

अशोक कुमार मोंगा—फरीदकोट : चाचा जी दिल की लगी में जब दो दिल मिलते हैं तो एक हो जाते हैं। जब आंखें मिलती हैं तो चार क्यों हो जाती हैं?

उ० : पता नहीं आप कौन से दिलों और आंखों की बात कर रहे हैं। दिल की लगी तो आजकल दिल्लगी हो गई है। और आंखें एक बार आपकी चाची से लगी थीं, सो आज तक "आंख नहीं लगी।"

मांगीलाल नन्दराम—अमरखली : कृपया दीवाना का वार्षिक चन्दा बताइये?

उ० : केवल ४८ रुपये।

पी० के० हेमनानी—उदयपुर : आप दीवाना के मनोरंजन टैक्स का एक रुपया खुद हड़प जाते हैं। यह बड़ा संगीन जुर्म है। यह रुपया सरकारी खजाने में जाना चाहिये।

उ० : यह रुपया, सरकारी खजाने में ही जाता है और उसका नाम है 'दीवाने की सरकार।'

योगेश कुमार अग्रवाल—डीमापुर : क्या आपको पाठकों के प्रश्न खाकर पेट भरने की आदत है?

उ० : जी नहीं। आजकल तो इतने 'धौंसू' प्रश्न आ रहे हैं कि हमें खा जाते हैं और डकार तक नहीं लेते।

राज कुमार पुरथी—सहारनपुर : चाचा जी आपकी खोपड़ी डा० झटका से मिलती है। दांत चेलाराम से मिलते हैं तो शरीर किससे मिलता है?

उ० : जब हमारे अन्दर हमारा कुछ है ही नहीं तो शरीर आपसे मिलता होगा। चलो खैर हुई, अब कोई हम से नाराज होगा तो सर डा० झटका का फोड़ेगा। दांत चेलाराम के खट्टे करेगा और डंडे खाने के लिये आपकी कमर आगे आ जाएगी।

मानिक कुमार—डालटन गंज : दुनिया में पैसा बड़ा है या इन्सानियत?

उ० : सच पूछिये तो पैसा ही बड़ा है! इन्सानियत तो दही बड़े के बराबर रह गई है आजकल।

रविरंजन—पटना : आजकल लड़के बाल बढ़ा कर अमिताभ बच्चन तो बन रहे हैं, किन्तु बाल बढ़ा कर विवेकानन्द क्यों नहीं बनते?

उ० : बाल बढ़ाने से कोई कुछ नहीं बनता। अगर यही बात होती तो आज झमूराताभ बच्चन और स्वामी झमूरा नन्द से बड़ा कोई विद्यमान नहीं होता।

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

बन्द करो बकवास

सौ साल पहले मुझे तुमसे प्यार था आज भी है और कल भी रहेगा।

माना कि मेरे सर में से एक सफेद बाल निकला है इसका यह मतलब नहीं कि तुम मेरा मजाक उड़ाओ!

मेरी नींदों में तुम मेरे ख्वाबों में तुम हो चुके हम तुम्हारी मुहब्बत में गुम...

बन्द करो बकवास, मैं तो जानती तुम यह गाना अपने फूलों के लि गा रहे हो पर लोग सोचेंगे तुम्हें बुढ़ में इश्क सूझा है।
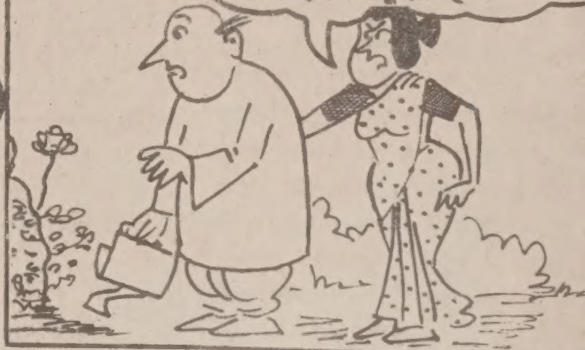
अरे मनू भाई मोटर चली पम-पम-पम।

बन्द करो बकवास, अपना हार्न ठीक कराओ वर्ना कल से मैं तुम्हारे साथ नहीं आऊंगी!
पम
पम पम
पम

—फिर एक दिन मैंने वन्दना से
ा कि मैं उससे शादी करना चाहता हूं
वन्दना ने कहा कि वह दुल्हन बनने से
ती है क्योंकि एक वृद्ध ज्योतिषी ने उसके
े में भविष्यवाणी कर रखी है कि वह
ी किसी की सुहागिन न बन सकेगी···

'मेरे दिल में भी यह भ्रम बैठ गया···
र मैंने सोचा हो सकता है ज्योतिषी का
लब यह रहा हो कि वन्दना का सुहाग
मर जाएगा इसलिए मैं वन्दना के समीप
े से कुछ घबराने लगा। इन्हीं दिनों
ग से मेरी भेंट मिस बम्बई से हो गई···
का नाम रीटा था···वह बहुत सुन्दर
ी थी···उसकी मुस्कराहट पर चाँद-
का मान होता था···मैं बम्बई के एक
ड़पति सेठ का इकलौता बेटा हूं···

'रीटा से मेरा प्रेम एक करोड़पति ही
प में हुआ···उसने दोनों बाँहें खोलकर
स्वागत किया···जो कष्ट और जो दूरी
वन्दना से देखनी पड़ती थीं वहाँ उस
और दूरी का नाम तक न था···

'रीटा के लिए ही मैंने वन्दना को
दिया···और धीरे-धीरे रीटा की
की छाया में खोता चला गया—मैंने
साथ शादी का प्लान भी बना लिया।
से पहले रीटा यूरोप की सैर करना
थी···मैं उसे घुमाने के लिए यूरोप
मेरिका ले गया···इस दौरान उसका
छ मेरा था और मेरा सब कुछ उसका
जब कैलीफोर्निया में वह 'मिस
के कम्पीटीशन में भाग लेने गई तो
के साथ था वहाँ मेरा स्तर एक
र' के समान रह गया था क्योंकि
टा 'मिस वर्ल्ड' का मुकाबला जीतने
अपना सब कुछ दाव पर लगा रही
दन रात न जाने उसे कितने आदमियों को खुश करना पड़ा था। मैंने उसके साथ लाखों रुपये खर्च किए थे लेकिन मुझे देखकर वह यूं उकताई-उकताई-सी लगने लगी थी मानो मैं ही उसकी उन्नति के मार्ग में सबसे बड़ी रुकावट हूं।

'वहाँ सबसे पहले मुझे यह अनुभव हुआ कि ग्लैमर को भावना और प्यार के बन्धनों में नहीं जकड़ा जा सकता···ग्लैमर वास्तव में पब्लिक का अधिकार है···मैंने इतने दिन रीटा के साथ बिताकर अपना समय बर्बाद किया है—अब मुझे वन्दना की याद सताने लगी···जो इतनी सुन्दर थी··· और इतनी पवित्र कि मुझ से असीम प्यार करते हुए भी मेरे एक चुम्बन से भड़क उठी थी···तब मैंने सोचा कि उसका ग्लैमर··· वन्दना का ग्लैमर केवल एक आदमी का अधिकार है—और वह आदमी केवल वह है जो उसका पति बनेगा···'

दशरथ ने उसकी बात काटकर व्यंग्य से कहा—

'इसीलिए उसका ग्लैमर खरीदने के लिए आप भारत वापस लौट आए।'

'जी नहीं—' सुरेश ने कहा, 'मैं उसका ग्लैमर खरीदने नहीं बल्कि उसका प्यार पाने के लिए आया हूं—दशरथ बाबू···ग्लैमर मैंने बहुत खरीद लिया है···रीटा से लेकर दर्जनों ऐसी सुन्दरियों तक···अगर मैं बाजार में मूल्य लगा कर फेंक दूं तो मेरे कदमों में चारों ओर से ग्लैमर ही ग्लैमर लोटने लगे —लेकिन अब मैं उस ग्लैमर से थक चुका हूं दशरथ बाबू···अब मुझे सच्चा प्यार चाहिए···इसी सच्चे प्यार की चाह में मैं वन्दना के पास आया था।'

'लेकिन आपने आने में बहुत देर कर दी।'

मैं जानता हूं आपकी और वन्दना की शादी निश्चित हो चुकी है—फिर भी मैं अपना पहला प्यार पाना चाहता हूं और आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप मेरी सहायता करें···आप चाहें तो मेरे और वन्दना के बीच की दीवार गिरा सकते हैं—। यह बड़ा उपकार का काम होगा।'

'यह आप मुझ से कह रहे हैं···? इस समय···।'

'जी हाँ—मैं जानता हूं अगर मैं वन्दना के पास जाऊंगा तो वह मुझे ठुकरा देगी··· वह बड़ी स्वाभिमान वाली लड़की है—अगर वह मुझ से छिन गई तो मैं कहीं का नहीं रहूंगा।'

कहते-कहते सुरेश की आवाज भर्रा गई। दशरथ ने आश्चर्य से कहा—

'आप जानते हैं कि वन्दना के भाग्य में सुहागिन बनना नहीं है···फिर भी आप उससे शादी करना चाहते हैं?'

'यह बात तो आप भी जानते हैं—फिर भी आप उससे शादी कर रहे है?'
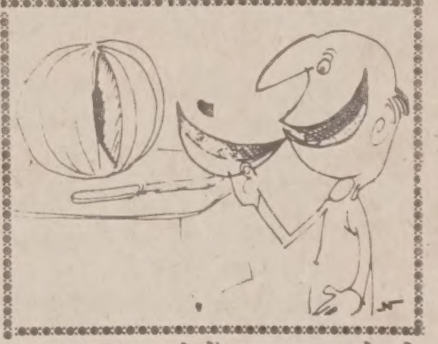
दशरथ सन्नाटे में रह गया—सुरेश ने फिर भारी आवाज में कहा—

'अगर उसके भाग्य में सुहागिन बनना नहीं होगा तो शादी से पहले मैं मर जाऊंगा ···या वह···अगर मैं मर भी जाऊंगा तो इसकी मुझे चिन्ता नहीं—भगवान् न करे उसे कुछ हो गया···तो···तो···मैं···मैं भी अपने प्राण दे दूंगा—लेकिन मैं वन्दना के बिना जिन्दा नहीं रह सकता···दशरथ जी··· अगर भगवान् ने मुझे वन्दना से लम्बा जीवन दिया है तो मैं भगवान् के चरणों में अपना माथा रगड़-रगड़कर वन्दना के लिए जीवन की भीख मांग लूंगा···अगर मेरा प्यार सच्चा है तो भगवान् मेरे लिए वन्दना का जीवन जरूर लौटा देगा।'

दशरथ सन्नाटे में खड़ा था···उसके मस्तिष्क में तेज-तेज आंधी चल रही थी··· जोर-जोर से घंटे बज रहे थे। वह किसी

फैसले पर न पहुंच पा रहा था। सुरेश ने हाथ जोड़कर कहा—

'दशरथ बाबू···मुझे मेरे प्यार की भीख दे दीजिए।'

'चले जाइए···भगवान के लिए यहाँ से चले जाइए।'

दशरथ तेजी से अन्दर चला गया···नौजवान हाथ जोड़े ही खड़ा रहा।

□ दशरथ कोठी के एक कमरे में दुल्हा बन रहा था···उसकी माँ उसे अपने हाथों से सेहरा बाँध रही थी···बाहर कुछ लोगों की भीड़ भी थी···लेकिन दशरथ के कानों में घंटियां-सी बज रही थीं—उसे ऐसे लग रहा था जैसे बहुत जोर की आँधी आ रही हो···

अचानक उसके कानों से सिसकियों की आवाज टकराई और दशरथ उछल पड़ा···यह रचना की आत्मा की सिसकियाँ थीं···दशरथ के कानों से रचना की आवाज टकराई।

'दशरथ! मैं तुम से एकान्त में कुछ बातें करना चाहती हूं—अपनी माँ को बाहर भेज दो।'

दशरथ ने किसी बहाने से मां को बाहर भेज दिया··दरवाजा अन्दर से बन्द हुआ और अचानक रचना सामने आ गई···उसकी आंखों में आँसू झिलमिला रहे थे—दशरथ ने आश्चर्य से कहा।

'रचना! यह क्या है?'

'दशरथ! तुम यह घंटियों की आवाजें सुन रहे हो?'

'हाँ—सुन रहा हूं।'

'जानते हो यह कौन बजा रहा है?

'नहीं—।'

'यह सुरेश है—।'

'सुरेश···!' दशरथ उछल पड़ा।

'हाँ, सुरेश ने भगवान् के चरणों में अपना माथा फोड़ लिया है—वह गिड़गिड़ाकर भगवान् से वन्दना की भीख मांग रहा है—क्योंकि वह सचमुच वन्दना से प्यार करता है।

'किन्तु···किन्तु···वन्दना तो मर जाती आज की रात।'

'हाँ दशरथ वन्दना जरूर मर जाती अगर उसके फेरे तुम्हारे साथ हो जाते···और उसके साथ ही···मैं उसके शरीर में आ जाती··लेकिन···'

'लेकिन क्या रचना···?'

'लेकिन सुरेश की पुकार से आकाश भी हिल गया है···भगवान् वन्दना का शरीर मुझे सौंप चुके हैं···और अब वह असमंजस में हैं—भगवान् ने फैसला मुझ पर छोड़ दिया है।'

'क्या मतलब?'

'भगवान् ने यह फैसला मुझ पर छोड़ दिया है कि मैं चाहूं तो वन्दना का शरीर ले लूं···और···और···अगर मैं चाहूँ तो वन्दना जिन्दा भी रहेगी और सुहागिन भी बन सकेगी उसके फेरे सुरेश के साथ हो जाएं।'

'यह तुम क्या कर रही हो रचना?'
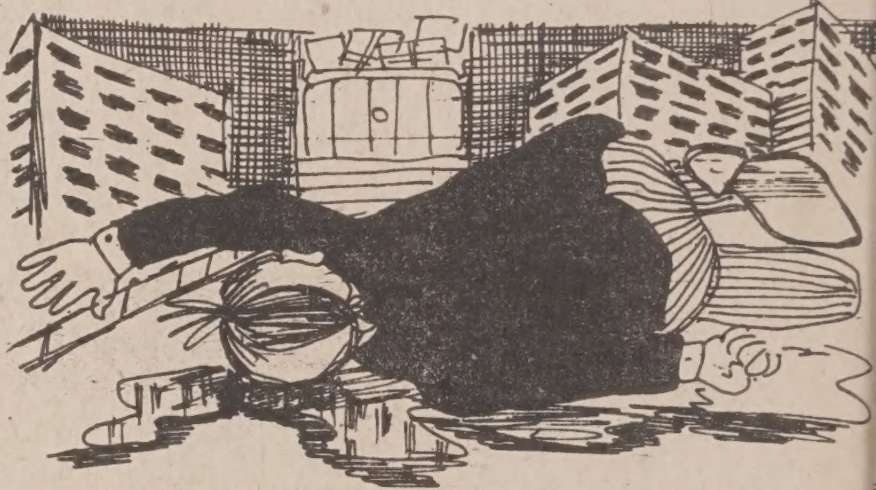
'मैं सच कह रही हूं दशरथ।'

रचना सिसक उठी और बोली—

सच कहती हूं—आज मैं सुरेश और वन्दना के बीच एक दीवार बन गई हूं···बिल्कुल ऐसे जैसे मेरे और तुम्हारे प्यार के बीच कभी रानी दीवार बनकर खड़ी हो गई—लेकिन···लेकिन मैं अपने आपको रानी के स्तर तक नहीं गिराना चाहती—दशरथ···भगवान् के लिए तुम इस शादी से इन्कार कर दो।'

'लेकिन·····लेकिन·····फिर हमारा मिलाप—।'

'मैं···मैं···तुम्हारे लिए आकाश पर प्रतीक्षा करूंगी दशरथ चाहे इसके लिए मुझे हजारों बरस भी क्यों न लग जाएं···लेकिन अब मैं इस दुनिया में रहकर किसी के प्यार के बीच दीवार नहीं बनूंगी···मैं जा रही हूं दशरथ···मैं जा रही हूं।'

रचना पीछे हटने लगी तो दशरथ दोनों हाथ फैलाकर उसकी ओर बढ़ता हुआ बोला—

'नहीं नहीं···यह असम्भव है रचना···मैं तुम्हें नहीं जाने दूंगा···तुम मुझे अकेला छोड़कर नहीं जा सकती रचना···तुम मुझे अकेला छोड़कर नहीं जा सकती।'

'मैं जा रही हूं दशरथ···मैं जा रही हूं।'

'नहीं रचना नहीं···मुझे भी अपने साथ ले चलो।'

'रचना पीछे हटते-हटते अचानक लोप हो गई···दशरथ अपनी पूरी शक्ति से चिल्लाया—

'रचना···रचना···।'

दशरथ भागता हुआ बाहर निकला और चीखता हुआ पुकारा—

'रचना···मैं आ रहा हूं···।'

दशरथ की माँ और हाल में उपस्थित दूसरे लोग चौंक पड़े···दशरथ की माँ चिल्लाई—

'दशरथ! तुझे क्या हो गया बेटे?'

फिर वह सब लोग दशरथ के पीछे दौड़ पड़े···

दशरथ को शायद किसी की आवाज सुनाई नहीं दे रही थी। वह पागल के समान चीखता हुआ बाहर दौड़ रहा था—

'रचना! मैं आ रहा हूँ···'

'मुझे अकेला छोड़कर मत जाओ रचना।'

'दशरथ···मेरे लाल···।'

दशरथ दौड़ता हुआ फाटक से निकल गया···उसके पीछे-पीछे सब लोग दौड़ रहे थे···सहसा सामने से आते हुए एक ट्रक के ब्रेकें चिरमिराईं···ड्राइवर ने फुर्ती से स्टियरिंग भी घुमाया लेकिन इतनी देर में दशरथ के ऊपर से ट्रक के दोनों पहिये गुजर

रे लाल।'

न से फटी-फटी-सी चीखें
खड़ा कर चारों खाने चित
थ खून में लथपथ सड़क पर
ा—उसके होंठ हिल रहे थे
ी-हल्की-सी आवाज निकल
ी को भी सुनाई नहीं दे रही

···आ रहा हूँ···रचना।'
दशरथ का शरीर स्थिर हो
ो गया।

हर जाओ···रचना···मैं
गया हूँ···।'

आत्मा ने पलटकर देखा।
दोनों हाथ फैलाए रचना
ली आ रही थी···रचना ने
ा···दशरथ का शरीर लहू
और मांस का ढांचा-सा
···उसके चारों ओर भीड़
। रचना ने फिर दशरथ
र भर्राई हुई आवाज में
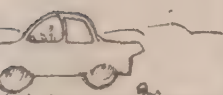
तुमने क्या किया दशरथ ?'
ी रचना···मैं सारे बंधन,
स आ गया हूँ।'

नीचे देखो···वह सामने
हुआ है जिसे शरीर
दिखाने से मुक्ति प्राप्त
'अब तुम्हें मुझ से कोई
···रचना···अब हमें कोई
ता···रचना तुम मेरी
हो।'

नों हाथ फैल गए···
की आत्मा बढ़कर

रचना की आत्मा से मिल गई···दोनों···दोनों एक-दूसरे में समा गई···दशरथ की भारी आवाज उभरी—

'मैं आ गया हूँ रचना···मेरी रचना···अब हमारे बीच कोई दीवार नहीं है···अब तुम्हें मेरी प्रतीक्षा में इस गंदी दुनिया में नहीं भटकना पड़ेगा।'

दोनों एक-दूसरे में समाए हुए थे और दोनों की सिसकियां गूंज रही थीं।

वन्दना ने रोते-रोते तकिए पर से सिर उठाया और सामने खड़े सुरेश को देखकर सीधी बैठ गई। सुरेश के बदन पर मैला कुचैला लिबास था···नंगे पाँव, बिखरे हुए बाल···बढ़ी हुई दाढ़ी और माथे के घावों से बहा हुआ लहू चेहरे, दाढ़ी और कमीज पर फैला हुआ···उसे वन्दना के दो नौकरों ने बलपूर्वक पकड़ रखा था···वह कहे जा रहा था—

'वन्दना ! देखो···मैंने तुम्हें भगवान् से छीन लिया है वन्दना···'

'सुरेश···' वन्दना कांपती आवाज में बोली, 'क्या लेने आए हो तुम यहां ?'

'मैं···तुम्हें अपनाने आया हूँ वन्दना···भगवान् के लिए मुझसे जो दोष हो गया है उसे क्षमा कर दो···'

इससे पहले कि वन्दना कुछ बोलती···अचानक उसके कानों में दशरथ की आवाज गूंजी—

'इसे क्षमा कर दो वन्दना···यह सच-मुच तुम से सच्चा प्यार करता है···इसके माथे पर यह जो घाव हैं उस तपस्या के साक्षी हैं जो उसने तुम्हें भगवान् से वापस मांगने के लिए की है—इसने तुम्हें भगवान् से नया जन्म दिला दिया है वन्दना···इसे क्षमा कर दो···इसके साथ शादी करो···इसे अपने आँचल में बांध लो···अगर तुमने इसे ठुकरा दिया···तो इतना याद रखो कि इसकी आत्मा तुम्हारे प्यार में भटकेगी और इसे तुम्हारे अगले जन्म की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी···क्योंकि इसका प्यार बिल्कुल सच्चा है।'

वन्दना की आंखें आश्चर्य से फैली हुई थीं···सुरेश भी दशरथ का आखिरी वाक्य सुनकर भौचक्क-सा इधर-उधर देख रहा था वह बड़बड़ाया—

'देखा तुमने वन्दना···दशरथ की आत्मा मेरे प्यार की सच्चाई की साक्षी बनकर आई है—अब मेरे भी प्यार पर विश्वास नहीं आया तुम्हें वन्दना ?'

वन्दना के होंठों से कांपती आवाज निकली—

'सुरेश···मेरे सुरेश।'

'वन्दना···।'

सुरेश और वन्दना एक-दूसरे से लिपटे सिसकियाँ भर रहे थे, वन्दना का आँचल आंसुओं से गीला हो गया था। उसने सुरेश को और करीब कर लिया। सुरेश को लग रहा था, जैसे उसके सारे दुःख दर्द गीले आंचल में सिमटते जा रहे हों···बाहर दर-वाजे में खड़े कर्नल की आँखों में आंसू थे···।

॥ समाप्त ॥

कलियुगी पांडव

—**रामस्वरूप विज**

कौरवों ने फिर खेला इलैक्शन का जुआ,
मगर इस बार वो उनका न हुआ।
जीत गए पाँच पांडव ॥
जीते हुए जुआरिये, अब मस्तियां झाड़ रहे हैं।
एक-दूसरे की पगड़ियां उतार रहे हैं।
"अर्जुन" "भीम" को कपटी बताता है,
नकुल "सहदेव" को कृतघन दर्शाता है।
युधिष्ठर सबको जोश दिलाता है।
सब में सन्धि करवाता है।
दुर्योधन, कर्ण, शकुनि पर तो बिठलाने ही थे कमीशन,
पर खराब कर ली अपनी ही पोजिशन।

अब—
कोई फँसा है करप्शन के रगड़े में,
कोई उलझा है "कुर्सी" के झगड़े में,
कहीं चन्दे में घोटाला है,
कहीं सैक्स का बोल-बाला है।
सभी एक-दूसरे को डाँट रहे हैं—
दाल जूतियों में बाँट रहे हैं ॥
डायालासिस पर पड़े असहाय, बूढ़े पितामह—
अनुलाप अश्रु बहा रहे हैं।
धृतराष्ट्र के बेटे बगलें बजा रहे हैं ॥
घर की फूट ने तो—
सोने की लंका में उठवा दी लपटें आग की,
यह कलियुगी पांडव हैं मूली किस बाग की ॥
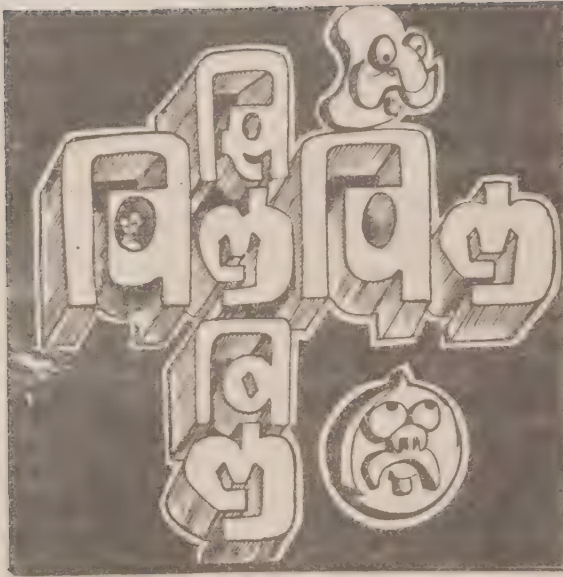
चूहे, तुझे पता है परसों कौन सा दिन है ?

सभी दिन एक से ही तो होते हैं। सुबह सूरज निकलता है और शाम को डूब जाता है। कल भी यही होगा और परसों भी।

परसों हमारे परम पूजनीय ज्येष्ठ भ्राता जी चौधरी पिलपिल चन्द का शुभ जन्म दिवस है।
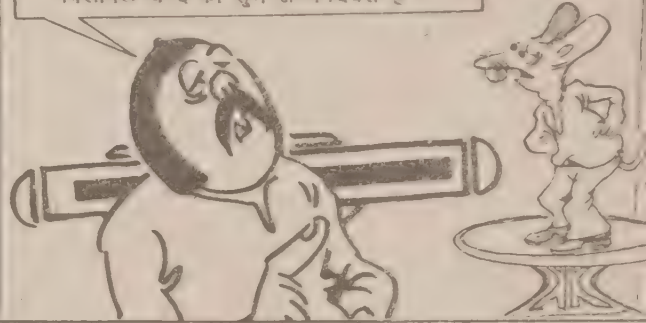
हम अपने भाई जी का जन्म दिवस इतने धूमधाम से मनाना चाहते हैं कि २६ जनवरी की गणतंत्र दिवस परेड भी उसके सामने फीकी पड जायेगी। सब दीवाना पढ़ने वालों की आंखें फटी की फटी रह जायेंगी.

थम बच के रहियो यह सलाइयां लेके थारी आंखें फोड़ देगा। यह सिलबिल है इसके दिमाग का कुछ भी पता नहीं लगता कि किस वक्त इसके दिमाग में कौन सी खिचड़ी पकेगी। जनता पार्टी का वरिष्ठ नेता है ये।

थम फिकर मत करो। मैं दूसरों की आंखें फोड़ने वाला नहीं हूं। वैसे भी आजकल दूसरों की आंखें फोड़ने वाले सब भारत के महान सपूत श्री राजनारायण जी की कोठी पर हाजिरी देने में बिजी रहते हैं। मैं तो एक सीधा-साधा हरयाणे का किसान भाई हूं।
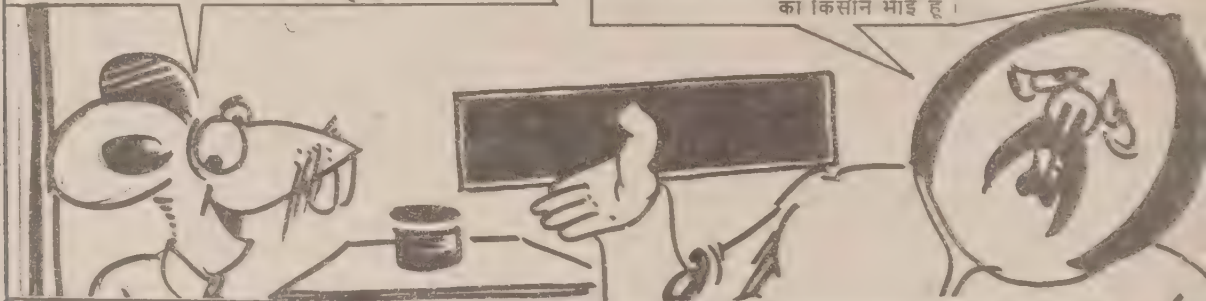
एक तरीका तो यह हो सकता है कि क्वालिटी आइसक्रीम वालों से हम दस पौंड का बर्थ डे केक बनवालें और उसे पिलपिल के सिर पर रख कर उसे गधे पर बिठा कर सारी दिल्ली में जलूस निकाला जाये। हम दोनों पीछे पीछे भंगड़ा पाते चलेंगे। जरूरत पड़ी तो हम बैंड बाजे वालों को भी भाड़े पर ले सकते हैं।

गंजे चंदा देकर पैसा इकट्ठा कर गंजा सम्मेलन का दफ्तर गे और पिलपिल की अगली बर्थ डे पर उसे ७७ लाख ये की थैली भेंट करेंगे। थैली में एक भी खोटा रुपया नहीं । जरा सोच म्हारे हाथ ७७ लाख रुपये आ गिये तो ना मजा रहेगा। थारी भैंसें भी पुलाव और माडर्न ब्रेड खा सकेंगी।
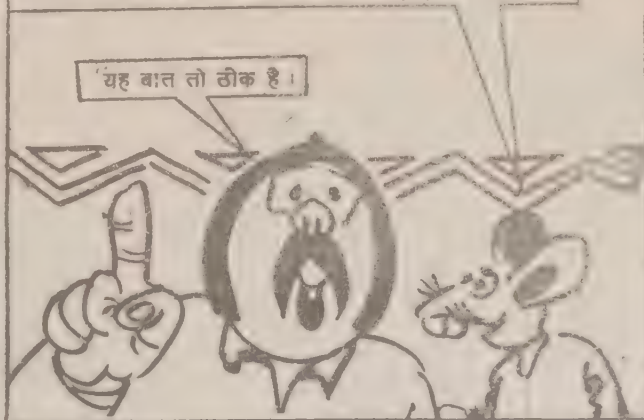
इस बार हमको वही केक काट कर बर्थ डे मनाना पड़ेगा। देयर इज नो टायम मैन ! यह रैली और गंजा सम्मेलन अगर हम जीते रहे तो अगले साल करेंगे। अभी से हम तैयारियां शुरू करेंगे। गंजा रैली के एक महीने पहले से हिन्दुस्तान भर से दिल्ली आने वाली सारी रैलों, हवाई जहाजों, बसों, टेम्पूओं,
ट्रकों, बैलगाड़ियों, साइकिलों, खच्चरों और गधों की बुकिंग करवानी पड़ेगी। इस बार हम दोनों मिल कर पिलपिल को एक अच्छा-सा तोहफा देंगे। तोहफा ऐसा होना चाहिये जो उसे उम्र भर याद रहे। हमारे प्यार की अमर निशानी के रूप में उसके पास ऐसे ही रहे जैसे आगरे का ताजमहल।
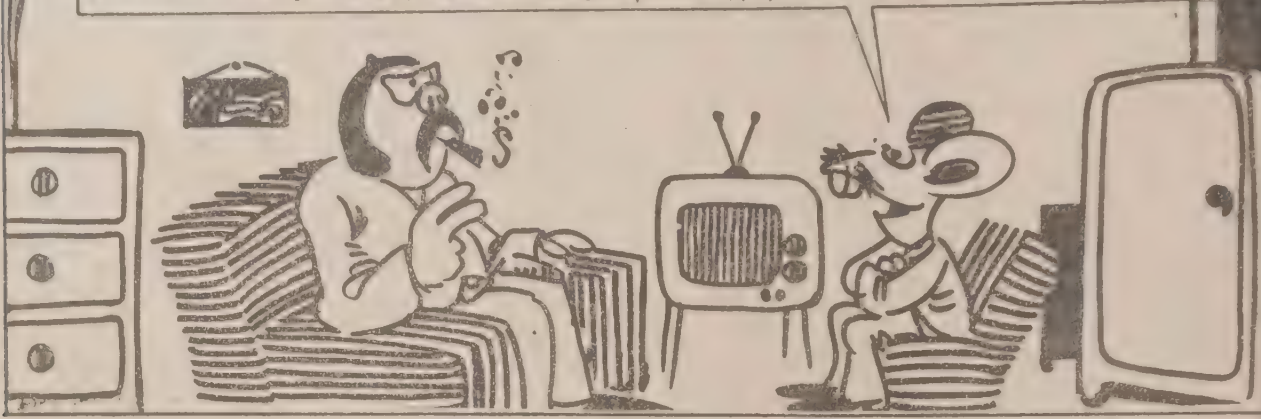
तो हम पिलपिल को बर्थ डे पर एक बागड़ी भैंस प्रेजेन्ट करेंगे। लॉन में बंधी जब वह भैंस रम्भायेगी तो पिलपिल को हमारी याद आयेगी। उसके दूध से निकले घी के साथ जब वह चावल, शक्कर खायेगा तो हर कौर के साथ उसे हमारे अटूट प्यार का बोध होगा। दूध की लस्सी पीकर जो डकार आयेगी उसमें हमारे लिये शुभकामना छिपी होगी।
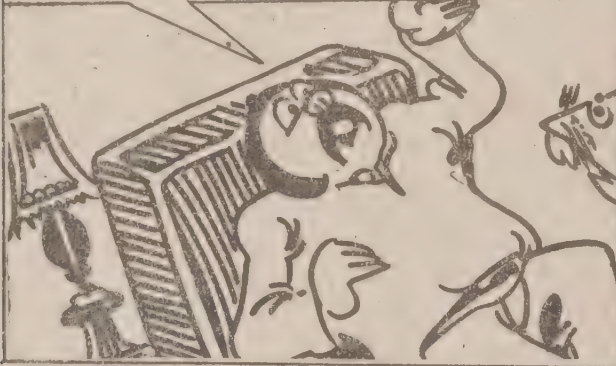
दस बरस दिल्ली में रहने के बाद भी तू जाट का जाट रहया। तेरे दिमाग से भैंस की लीद और गन्ने का कचरा न हटा। अरे भई, शायद लोग ठीक ही कहते हैं कि जाट रे ज सोलह दूनी आठ। तेरे सिर पर नौ रुपये वाली खाट। भैंस कोई बर्थ डे पर प्रेजेन्ट देने लायक चीज है? यह बो ७४७ और जैगुआर डीप पैनीट्रेशन स्ट्राइक एयरक्राफ्ट जमाना है।

चूहे, शायद तू ठीक कहता है। हम माडर्न जमाने में रह रहे हैं। हमको गंवारू लगने वाले काम नहीं करने चाहियें। चौधरी चरण सिंह हमारा नेता है तो क्या हुआ?
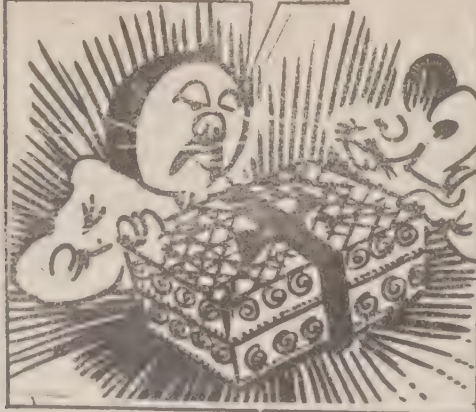
चलो बर्थ डे प्रेजेन्ट का मामला तो खत्म हुआ। हम परसों सुबह तड़के ही उठ कर पिलपिल की आंख खुलने से पहले ही यह प्रेजेन्ट उसके बिस्तर पर ऐसे रखेंगे कि आंख खुलते ही सबसे पहले उसकी नजर उस पर पड़ेगी।
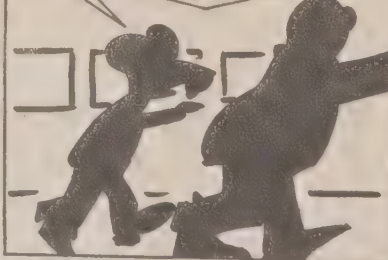
उस दिन जब पार्टी होगी तो गाना भी तो गाना पड़ेगा। फिल्मों में भी ऐसा ही होता है, हीरो की बर्थ डे पार्टी पर पियानो पर हीरोइन गाना जरूर गाती है। बगैर गाने बर्थ डे पार्टी का मजा ही नहीं है। हम भी करेगा।
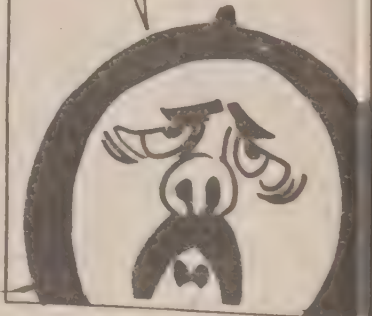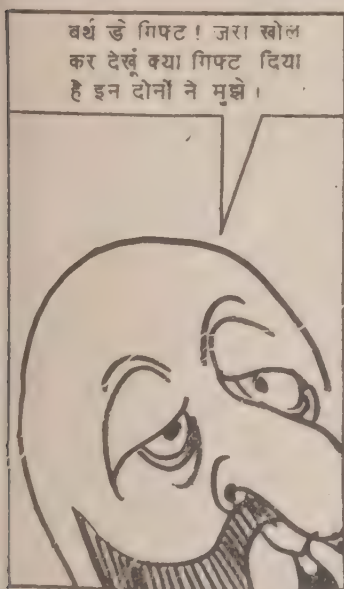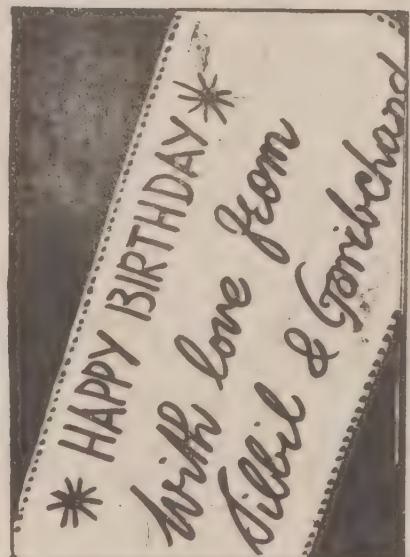
पिलपिल-सिलबिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िये।

आपके पत्र

दीवाना का फड़फड़ाता हुआ ताजा-ताजा चटपटा अंक ३३ प्राप्त हुआ। चिल्ली लीला ने बाढ़ में वही काम किया जो मैंने किया था, क्योंकि मैं भी माडल-टाऊन बाढ़-ग्रस्त वासी हूं। दीवाना में फैंटम, बच्चा झमूरा, बन्द करो बकवास, चचा बातुनी, पंचतंत्र मोटू-पतलू, काका के कारतूस एवं क्यों और कैसे वैसे ही चटपटे लगे, जैसे हमेशा लगते हैं। दीवाना को मैं इतना चट-पटा देखना चाहता हूं कि मुंह से सीईईई की सी आवाज निकल पड़े। दीवाना में आपके पत्र, काका के कारतूस एवं आपस की बातें में आप कार्टून ना दिया करें। क्योंकि इन कार्टूनों में तीन चार पाठकों के और पत्र आ सकते हैं।

मिठाईलाल (पान वाला) माडल-टाऊन

पाठकों की पसन्द पर ही कार्टून छापने शुरू किये हैं। —सं०

दीवाना का नया अंक पाकर ऐसा लगा मानो प्रसन्नता का बहुत बड़ा खजाना मिल गया हो। जिसे मेरे लिये संभालना कठिन हो रहा था। नये अंक के दीवाना के ढेर सारे स्तम्भ जैसे काका के कारतूस, आपस की बातें क्यों और कैसे, खेल खेल में और धारावाहिक कहानी दूसरी आत्मा पढ़कर बहुत ही मजा आ रहा है। लेखिका को मेरी ओर से बधाई।

राजेश महाजन—दिल्ली

दीवाना का ३० वां अंक मिला। दीवानी चिपकी बहुत पसन्द आई। और दो बार जाकर (५) दीवाना घर ले आया। और कई जगह काट कर चिपका दिया। अगली बार से इतनी अच्छी चिपकी ना दिया करें। ताकि फिर मुझे ५-६ दीवाना खरीदने पड़ें। काका के कारतूस, आपस की बातें, दूसरी आत्मा, खून की पुकार, मोटू-पतलू, और खेल-खेल में, बहुत पसन्द आये।

इमरान हैदरदुर्रानी—वर्धा (महाराष्ट्र)

दीवाना का नया ३२ वां अंक मिला। बहुत दिनों के बाद मुझे यह पत्रिका संतोषप्रद लगी। क्योंकि पहले मैं आज बच्चा झमूरा के बारे में लिखूंगा कि उसके पत्र ने मुझे हंसा दिया। यह अंक बिल्कुल साफ सुथरा था। मुख पृष्ठ देख कर हंसी रोकी नहीं गयी। चिल्ली लीला २३६ ठीक लगी। जनता मंत्री नेताओं के नाम खिलवाड़ ठीक लगी। क्या आप इसी तरह की खिलवाड़ इंदिरा कांग्रेस के साथ पढ़वायेंगे? पंचतंत्र, परोपकारी, सिलबिल-पिलपिल, मोटू-पतलू, फैंटम बहुत ही रोचक थे, पढ़कर मजा आ गया। मदहोश को कभी होश में दिखाइए, सवाल यह है बोर करता है। दीवाना की ब्यूटी ने मुझ पर इतना प्रभाव डाला है कि मैंने सबको रिजेक्ट कर दीवाना को सिलेक्ट किया है।

किशन अग्रवाल—रांची

दीवाना का अंक नं० ३२ बहुत ही पसन्द आया। सिलबिल-पिलपिल, मोटू-पतलू व परोपकारी के कारनामे बहुत ही पसन्द आये। वैसे तो शशि कपूर पर लेख बहुत रोचक लगा। परन्तु आप ने जो शशि, कपूर की फिल्में लिखी हैं उसमें 'जंजीर' फिल्म में तो शशि कपूर था ही नहीं कृपया आगे से ध्यान दें। **राज दीपक 'स्नेही'—हरियाणा**

दीवाना का अंक ३२ मिला। बहुत अच्छा लगा। दीवाना एक हास्य-व्यंग की बहुत अच्छी पत्रिका है परन्तु इसमें कार्टून बहुत कम होते हैं। आप एक ऐसा स्तम्भ शुरू करें। जिसमें पाठकों द्वारा भेजे गये कार्टून छापे जायें और प्रत्येक कार्टून पर छोटा-मोटा इनाम रख दें। इससे कार्टूनों की कमी पूरी हो जाएगी या आप पाठकों द्वारा भेजे गये चुटकुले छापने का एक स्तम्भ शुरू कर दें। **अवतार सिंह—अटिण्डा**

दीवाना के प्रत्येक अंक की बेसब्री से प्रतीक्षा करता हूं। इस बार भी हर बार की तरह लेट होकर ही दीवाना अंक ३३ प्राप्त हुआ। सभी शिकायतें खत्म हो गयी, 'तुक्के पर तुक्का, बाढ़ पीड़ित और फिल्म स्टार एवं सिलबिल-पिलपिल और मोटू-पतलू को पढ़कर। हिन्दी भाषा के नये दीवाने रूप भी काफी अच्छे थे।

पवन सखो बैरागी—इन्दौर

मैं दीवाना का नया पाठक हूँ। मैंने अंक २१ से दीवाना पढ़ना प्रारम्भ किया है। मैंने अन्य कई हास्य [illegible] निस्संदेह कह सकता हूं, कि आज दीवाना का स्थान प्रथम है। कल ही दीवाना का अंक ३३ मिला। मोटू-पतलू और चिल्ली लीला बहुत मजेदार थी। पिलपिल-सिलबिल के तो कहने ही क्या! कृपया 'साप्ताहिक भविष्य' और 'खेल खेल में' स्तम्भ बन्द कर दें। उनके स्थान पर चुटकुले आरम्भ कीजिए और हां कृपया अमिताभ बच्चन पर लेख लिखें और साथ में पता भी छापें।

पी० गुण सागर—जमशेदपुर

दीवाना का अंक ३३ मिला। चिल्ली लीला व मोटू-पतलू के कारनामे बहुत ही पसन्द आये। 'जाहिरा' पर लेख भी रोचक था। परोपकारी व पिलपिल-सिलबिल ठीक-ठीक रहे। काका के कारतूस वाला पन्ना तो मजेदार सामग्री से भरा होता है। कहानी भी पसन्द आई। लेखिका को बधाई।

स्नेही—सिरसा

दीवाना का नया अंक ३३ सप्ताह खत्म होने के बाद मिला। आते ही तुरन्त देखा और महसूस हुआ कि दीवाना पढ़ना रहूँ। लेकिन दीवाना का अंक ३३ समाप्त हो गया। काका के कारतूस, प्रेम-पत्र, आपके पत्र, आपसी बातें, तुक्के पर तुक्का, बाढ़ पीड़ित और फिल्म स्टार, बन्द करो बकवास, सिलबिल-पिलपिल, साप्ताहिक भविष्य, मोटू-पतलू आदि शर्त, आखरी में फिल्मी मुलाकातें आदि पढ़ने को मिलीं, पढ़कर दिल खुश हुआ।

के० जी० इन्दौरिया—गणेशगढ़

दीवाना अंक ३४ बिल्कुल सही वक्त पर प्राप्त हुआ, इससे मालूम पड़ता है कि आप हमारी शिकायतों पर ध्यान देते हैं। वैसे तो आपने दीवाना के पाठकों को दीवाना कर दिया है, परन्तु आदमी जितना उठे उतना कम है, जिस प्रकार एक नट पूरी मेह-नत से डंडे के ऊपर घूमता है, परन्तु नीचे खड़ा मंदारी ढोल पीट कर कहता है कसर रह गई, कसर रह गई। यही हिसाब हमारा है, दीवाना इस वक्त पूरी चोटी पर है पर हमें तसल्ली नहीं होती और आप हमें हमेशा तसल्ली देने के लिए जी तोड़ मेहनत करते हैं। दीवाना में प्रत्येक सामग्री पसन्द आई।

कमलकांत जैन—माडल टाऊन

मोटू पतलू

पिछले दिनों जासूसों के एक गैंग ने एयर होस्टैस शैली की सहेली कैबरे डांसर रोजी की हत्या कर दी थी। रोजी उस गैंग के लिये बड़े-बड़े लोगों से राज चुरा कर लाती थी। उसने एक जर्मन वैज्ञानिक की खुफिया फाइलों के फोटो लिये थे जो अब गैंग के लीडर शाईकांग के पास थे। उस गैंग ने रेल की पटरी को बारूद से उड़ा कर एक मालगाड़ी से खास पेटियां लूट ली थीं और इस केस की छानबीन करने वाले चेलाराम का अपहरण करके एक हैलिकाप्टर में फरार हो गये थे।

हैलिकाप्टर की खोज करते हुये मोटू-पतलू एक जहाज लेकर बम्बई पहुँचे तो वहाँ बीच समुद्र में एक टापू के किनारे खड़े पानी के एक जहाज ने मोटू-पतलू के जहाज को गोली मार कर गिरा दिया। मोटू पतलू ने पैराशूट से अपनी जान बचाई। पर टापू पर पहुंच कर पता चला, जान बची नहीं। अब आगे के हंगामे देखिये···!

वह लोग पतलू को एक अंधेरी काल कोठरी के मुंह पर ले गये और वहाँ उसे अन्दर धक्का दे दिया।

पतलू जहां जाकर पड़ा वहां चेलाराम पहले से कैद था।

तुम भी आ गये इनके काबू में ?
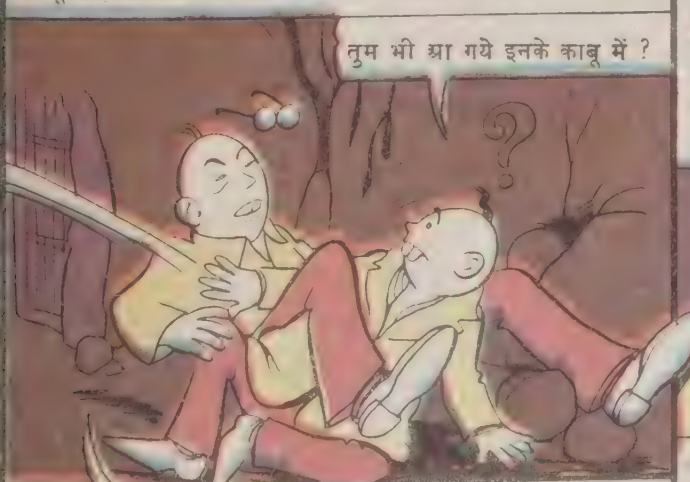
इनके जादू में ? यह लोग कोई जादू दिखा रहे हैं क्या।

मोटू कहता था तुझे कोई हैलिकाप्टर उड़ा कर ले गया। हम एयर होस्टैस शैली के एक फ्रेंड से उसका जहाज लेकर यहां आये तो किसी ने गोली मार कर हमारा जहाज गिरा दिया। हम पैराशूट बांध कर जलते जहाज से कूद गये। इसके बाद मोटू का क्या बना, कुछ पता नहीं! लगता है तू यहां मजे में है ?
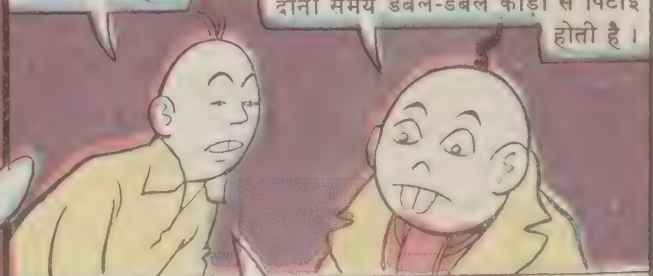
डबल रोटी के पकौड़ों के साथ खटाई होती है ? मतलब है यह मीठी चटनी नहीं देते खाने को ?

दूसरी ओर आदिवासी का तीर मोटू के कंधे पर लगा था। और उसे जान से मारने की बजाय जंगल में काम करने वाले आदिवासी उसे अपने मैनेजर के पास ले आये थे। उसके घायल कंधे से अब भी खून रिस रहा था।

तुम कौन हो ? और यहाँ क्यों आये हो ?

मैं समाचार पत्रों का सम्वाददाता हूं और समाचार जमा करने निकला हूं।

झूठ बोल रहे हो। बताओ तुम्हें यहां आने पर किसने उकसाया ?

किसी ने नहीं। रिपोर्टर का काम होता है हर जगह जाना और वहां का हाल चाल मालूम करना।

यों क्यों नहीं कहते जासूसी करना। पर यह मत भूलो ज्वालाद्वीप कोई ऐसी जगह नहीं है जहाँ कोई रिपोर्टर तो क्या एक चिड़िया भी पर मार सके।
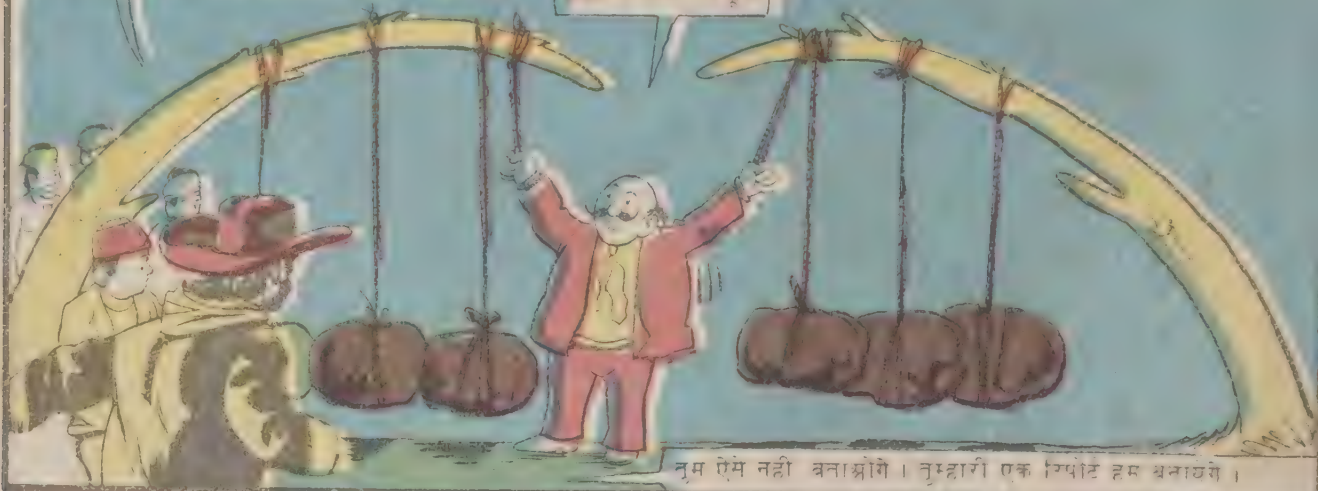
रस्सियां कटते ही पत्थरों का बोझ कम हुआ और पेड़ों का खिंचाव बढ़ते ही मोटू के मुंह से चीख निकल गई।
आह

अब भी मुंह से कुछ नहीं बका। दो पत्थर और काट दो।

दो पत्थर और कटे तो जैसे अब मोटू के हाथ टूट कर बदन से अलग होने वाले थे।
आह! मर गया।

लगता है बेहोश हो गया।
गोली मार कर छुट्टी करो इसकी।
नहीं। मरने से तो इसका भेद-भेद ही रह जाएगा
जैसे भी हो, इसके मुंह से उगलवाना है, कि यह कौन है और यहां क्यों आया है।

रस्सियां खोल कर इसे होश में लाओ। जहाज से कूदा हुआ एक और आदमी पकड़ा गया है। हमें पता लगाना है कि यह दोनों क्या एक साथ यहां आए हैं।
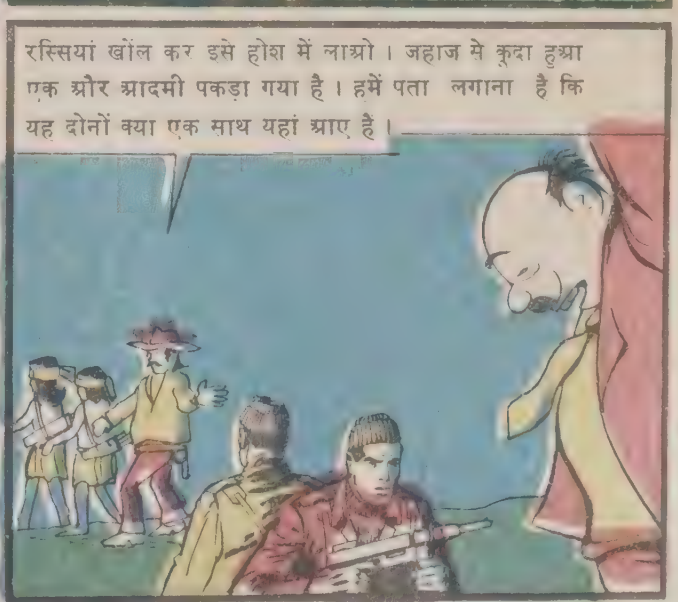
वास्तव में मोटू बेहोश होने का बहाना कर रहा था। उसकी रस्सियां काट दी गईं तो उसने आंख की झिरी से देखा अब वहां केवल दो पहरेदार रह गये थे।

मौका देखते ही उसने एक आदमी पर हमला कर दिया।
अरे मार दिया।
यह क्या चक्कर है ?
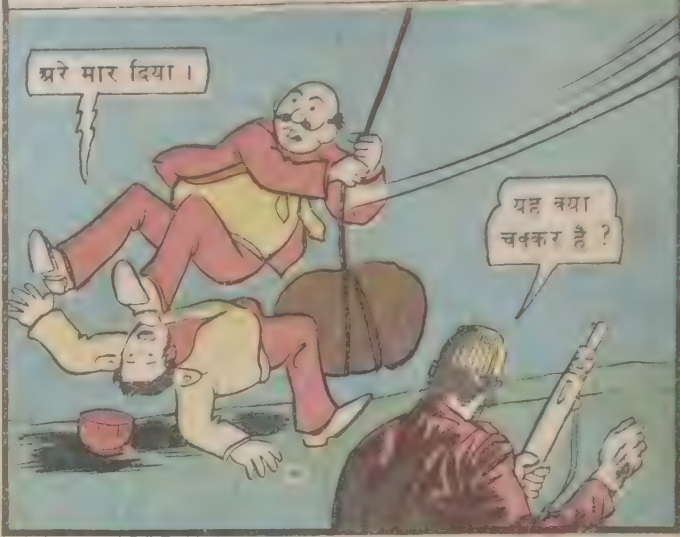
यह चक्कर है।
आह
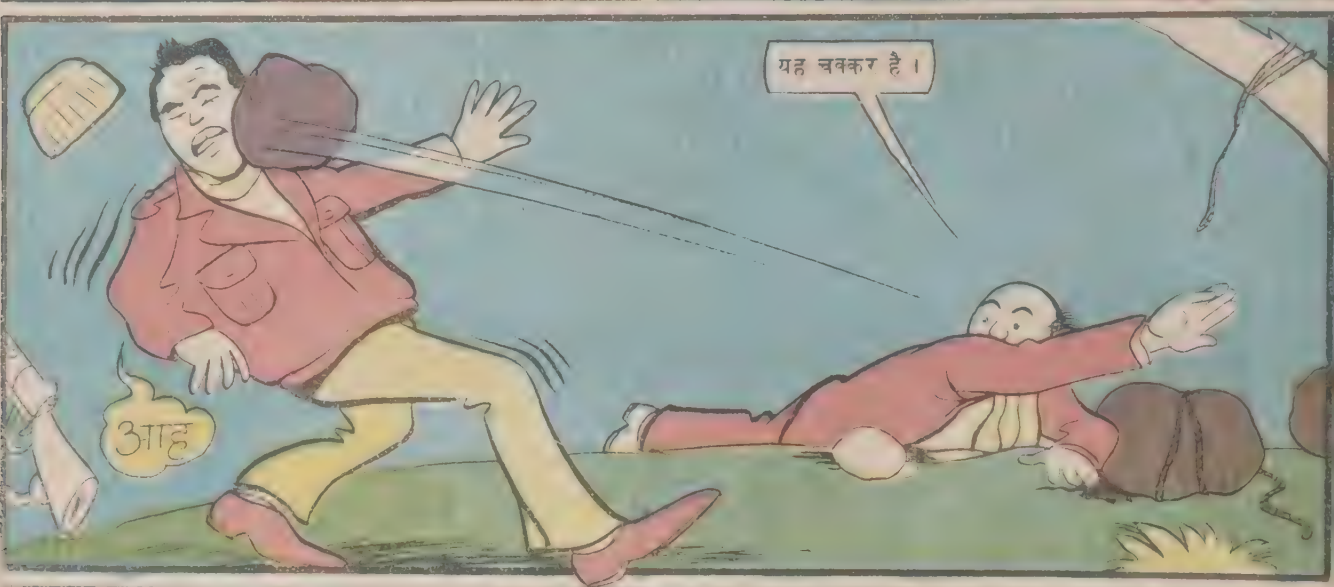
हैल्लो मैनेजर ! मोटा कैदी बच निकला। उसने डेविड को मार दिया। मैंने मुश्किल से जान बचाई है।

मुश्किल से जान तो मैंने बचाई है। पता नहीं कहां आ फंसा हूं मैं।

कोई बहुत बड़ा षडयंत्र है ।
यह भी मेरी जान के इतने दुश्मन बने हैं ।

वहीं एक घोड़ा गाड़ी जा रही थी । मोटू के पांव से फिसला एक पत्थर सीधा गाड़ीवान पर ग्रा पड़ा ।
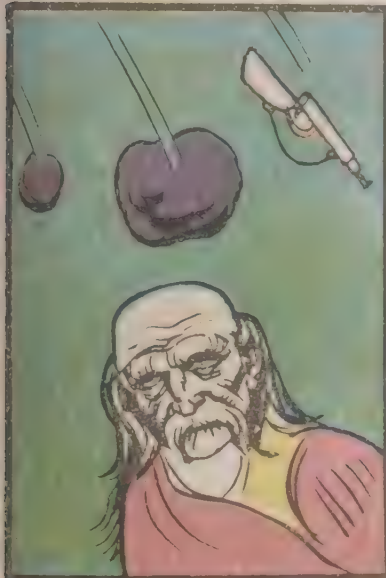
ग्रौर उसके घोड़े बिदक कर गाड़ी से ग्रलग हो गये ।

यह क्या मुसीबत खड़ी हो गई ।

गाड़ी खड्डे में जा पड़ेगी । इसे किसी भी तरह बचाना होगा ।

मर गये मोटू!
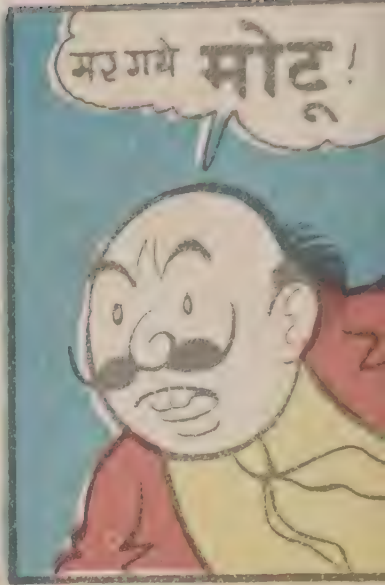
मैं अपनी जान की बाजी लगा दूंगा ।

पर गाड़ी खड्डे में नहीं गिरने दूंगा ।

मोटू लपक कर गाड़ी के आगे लेट गया और एक बड़ा सा पत्थर उसने गाड़ी के पहिये के नीचे फंसा दिया ।
आप जल्दी से गाड़ी से नीचे उतर जाइये ।
भगवान तेरा भला करे बेटा ।
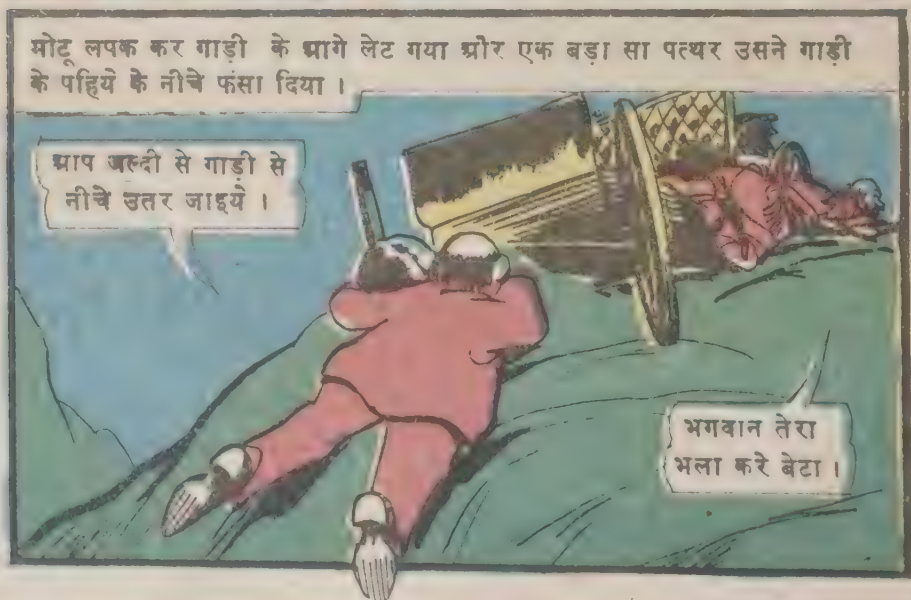
तुम कितने बहादुर हो !

हर मोड़ पर चौंका देने वाली इस जासूसी फिल्म का अगला भाग आगामी अंक में देखिये।

बचा झमूरे का
शानदार
बट्टूरा

खेल खेल में
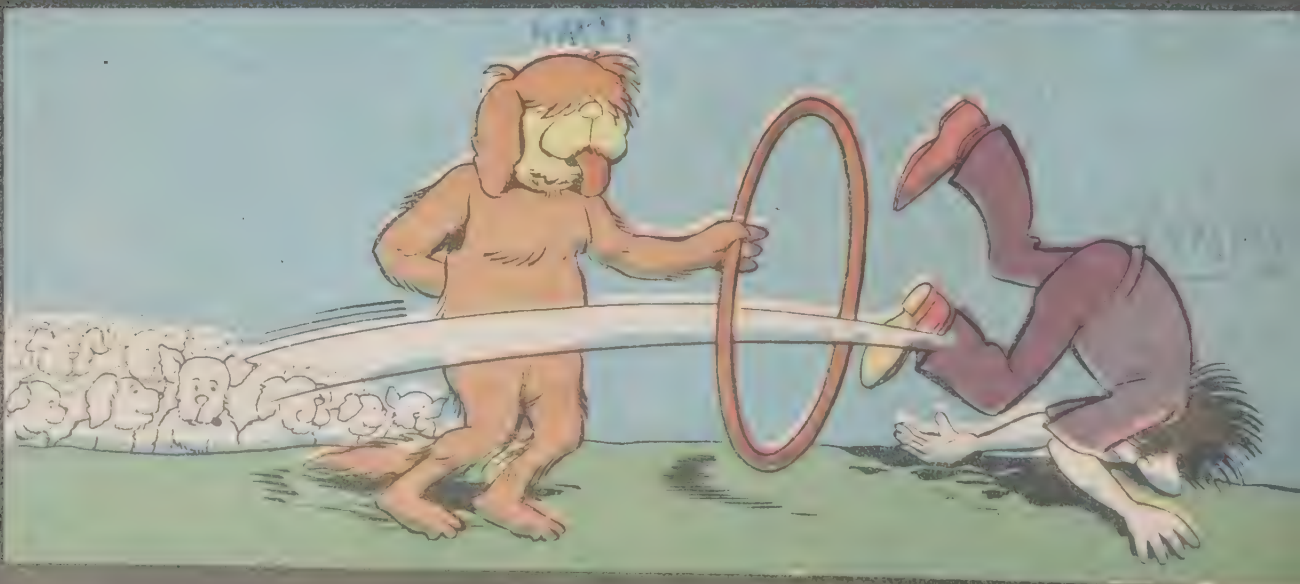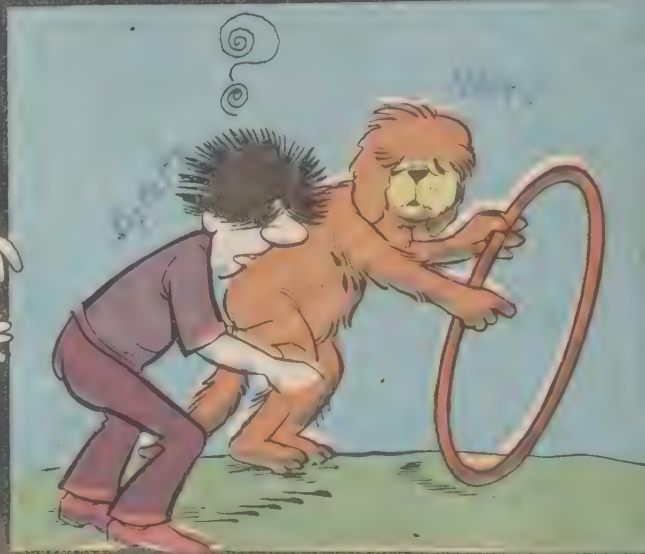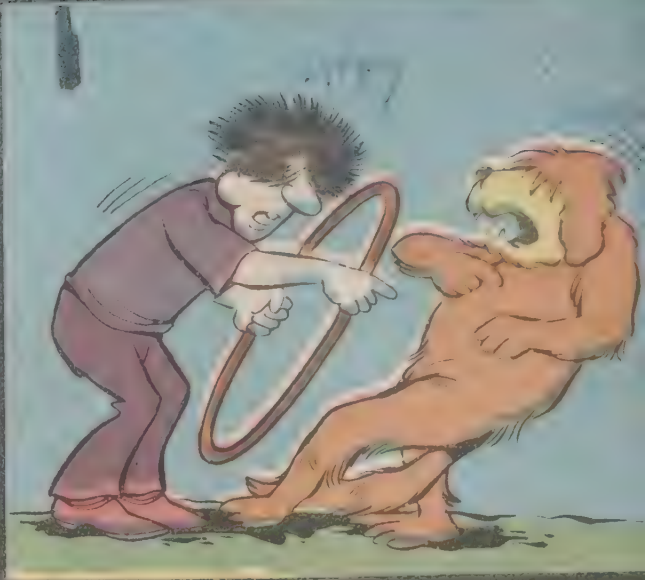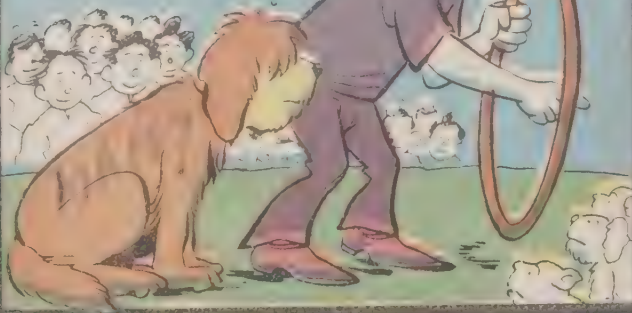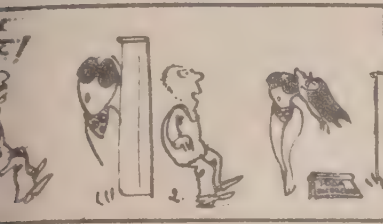
अवनी भारद्वाज जगदीश शर्मा—(हरियाणा)

प्र० : विश्व में सबसे ज्यादा रन किस देश के खिलाड़ी ने बनाये हैं ? उसका नाम बताइए ?

उ० : वैस्ट इंडीज के सर गैरी सोबर्स ने ८०३१ रन ।

अतहर ऐजाज—आगरा

प्र० : विश्वनाथ का उच्चतम स्कोर बताने का कष्ट करें और यह भी बतायें किस देश के विरुद्ध बनाये ?

उ० : १३९ रन इंगलैंड के विरुद्ध बम्बई में ।

पाकिस्तान टैस्ट क्रिकेट रोचक आंकड़ें

१५ अक्तूबर १९७८ से पहले विश्व टैस्ट क्रिकेट का ब्योरा

परिणाम

देश	खेले गये टैस्ट	जीते	हारे टैस्ट	बराबर टैस्ट	ड्रा	सफलता %	टॉस जीते
भारत	१५७	२८	६४	—	६५	३८.२१	८०
पाकिस्तान	९३	१५	५२	—	२६	४४.०८	५३
आस्ट्रेलिया	३८०	१७२	१०४	१	१०३	५९.०७	१८७
इंग्लैण्ड	५४२	२०४	२०१	—	१३७	५६.१८	२६७
वैस्ट इंडीज	१८३	६०	६६	१	५६	५०.८१	१००
दक्षिणी अफ्रीका	१७२	३८	५७	—	७७	३८.६६	८०
न्यूजीलैण्ड	१३३	१०	६०	—	६३	३०.०७	६३
सारे देशों द्वारा खेले गये टैस्टों की कुल संख्या ।							८३०

कुण्डलियाँ

—आजाद रामपुरी

(१)

फूले-फूले वे फिरें, पा कुर्सी का साथ ।
चन्दन से महकन लगे, दोनों लड्डुआ हाथ ॥
दोनों लड्डुआ हाथ, करें नित सैर-सपाटे ।
खुद सो फूलनि सेज, जन-जन को कांटे ॥
कहत 'पूरी आजाद', खुशी का झूला झूले ।
सत्ता गई मन भाइ, उमगि हिय, जनता भूले ॥

(२)

खूंटी ताने सो गये, नेता हो अलमस्त ।
जनता रो-रो बिलखती हुये हौंसले पस्त ॥
हुये हौंसले पस्त, समझ लीं मन में बातें ।
चार दिनों की मिली चांदनी, फेर अंधेरी रातें ॥
कहत 'पूरी आजाद' बड़े अंधों में काने ।
क्या है दोष सुयें यदि नेता, डट कर खूंटी ताने ॥

(३)

बना अखाड़ा देश में, दिल्ली का मैदान ।
ताल ठोक कर आ गये, बड़े-बड़े पहलवान ॥
बड़े-बड़े पहलवान, सिंह से आइ दहाड़ें ।
जो माई का लाल उसे हम आज पछाड़ें ॥
कहत 'पूरी आजाद' देश में विघ्न घना है ।
खुशहाली को छोड़ संकटी-दौर बना है ॥

पाक टैस्ट खिलाड़ियों का टैस्ट रिकार्ड (भारत के साथ शृंखला शुरू होने से पूर्व तक)

खिलाड़ी	टैस्ट	इनिंग्स	आउट नहीं	रन	उच्चतम स्कोर	औसत बल्लेबाजी	शतक	अर्द्ध शतक	कैच	स्टम्पड	रन	विकेट	गेंदबाजी का औसत	उत्तम गेंदबाजी
दुल कादिर	३	३	—	३६	२१	१२.००	—	—	२	—	३०५	१२	२५.४१	६- ४४
सफ इकबाल*	४५	७७	४	२,७४८	१७५	३७.६४	८	१०	२९	—	१,४०२	५०	२८.०४	५- ४८
रुन रसीद	१२	२१	१	७२७	१२२	३६.३५	२	३	६	—	३	—	—	—
रान खान*	१५	२६	२	५०३	५९	२०.९५	—	१	८	—	२,०४५	६२	३२.९८	६- ६३
बाल कासिम	११	१६	५	३४	८	३.०९	—	—	८	—	९३४	२७	३४.५९	४- ८४
वेद मियांदाद	१३	२२	४	९९४	२०६	५५.२२	२	६	१०	—	५१०	१५	३४.००	३- ७४
शाकत अली	५	७	३	२८	१२	७.००	—	—	१	—	३५९	६	५९.८३	३- ८०
जीद खान*	३७	६४	२	२,६५१	१६७	४२.७५	५	१३	४७	—	१,०६६	२४	४४.४१	४- ४५
हसन खान	४	६	—	२३५	४६	३९.१६	—	—	३	—	३	—	—	—
सर नजर	७	१२	—	४३०	११४	३५.८३	१	२	४	—	८८	२	४४.००	१- १६
ताक मुहम्मद*	४९	८८	७	३,२८३	२०१	४०.५३	१०	१७	३२	—	१,७७०	६२	२८.५३	५- २८
दिक मुहम्मद	३४	६२	२	२,३३०	१६६	३८.८३	५	१०	२४	—	७८	—	—	—
फराज नवाज	२६	३७	७	४४३	५३	१४.७६	—	२	१५	—	२,६२५	८२	३२.०१	६- ८९
कन्दर बख्त	७	९	३	२२	७	३.६६	—	—	१	—	६४१	१८	३५.६१	४-१३२
सम बारी	४२	६४	१६	७४८	७२	१५.५८	—	४	९४	१५	—	—	—	—
सम राजा	२०	३५	५	१,०९६	११७	३६.५३	२	६	४	—	५९८	१७	३५.१७	३- २२
र अब्बास*	२६	४७	१	१,५८३	२७४	३४.४१	३	६	१८	—	२	—	—	—

*खिलाड़ी जिन्होंने कैरी पैकर्स से कान्ट्रैक्ट किया हुआ है ।

हाकी कैसे खेलें

गेंद रोकना

सामने से या दायें-बायें से तेजी से आती हुई गेंद के सामने इस प्रकार स्टिक अड़ानी चाहिए कि गेंद वहीं स्थिर हो जाये। इसके लिए यह जरूरी है कि स्टिक के मुड़े हुए सपाट भाग पर गेंद का अधिक से अधिक भाग स्पर्श हो सके। गेंद का जितना कम से कम भाग आपकी स्टिक से लगेगा—गेंद उतनी ही विचलित होगी। आती हुई गेंद के सामने स्टिक कुछ झुकी हुई होनी चाहिए। यानी स्टिक का सपाट वाला हिस्सा ऊपर से नीचे की ओर झुका हो। इससे दो लाभ हैं—गेंद स्टिक से टकरा कर वापस नहीं लौट पाती। दूसरे तेजी से आती हुई गेंद स्टिक से टकरा कर, उछल नहीं पाती और स्टिक के बिल्कुल करीब ही स्थिर हो जाती है। गेंद रोकने के लिए भी मजबूत कलाई होनी चाहिए।

गेंद रोकने का अभ्यास बहुत ही आवश्यक होता है। आप गोल क्षेत्र के बिल्कुल नजदीक हैं और यदि अपने साथी खिलाड़ी द्वारा दिये किसी भी स्ट्रोक द्वारा पास को आप रोक कर गोल नहीं कर पाये तो आपकी सारी मेहनत बेकार हो गयी समझो। यदि खेल के मैदान में कोई खिलाड़ी दिये गये पास को नहीं रोक पाता तो उसका प्रदर्शन बड़ा हास्यास्पद हो जाता है और गेंद रोकने की यही असफलता कई स्वर्ण अवसरों को धूल-धूसरित कर देती है।

पास देना

हाकी के खेल में गोल करके विजय प्राप्त करने का दायित्व टीम के पूरे खिलाड़ियों पर होता है। अपनी असफलता के लिए आवश्यक है कि प्रत्येक खिलाड़ी एक दूसरे का सहयोग करके खेलें—सहयोग अर्थात् एक-दूसरे की ओर गेंद बढ़ाते हुए—इसे 'पास' देना कहते हैं। 'पास' छोटा भी हो सकता है और लम्बा भी, छोटे से तात्पर्य यह कि थोड़ी-थोड़ी दूर पर ही खिलाड़ी गेंद एक दूसरे की तरफ सरकाते हुए आगे बढ़ते जाएं। लम्बा 'पास' यानी दूर खड़े खिलाड़ी को गेंद दी जाए। वैसे तकनीकी दृष्टि से 'पास' सामान्य रूप से चार प्रकार के होते हैं—

(१) थ्रू पास
(२) क्रास पास
(३) डायगनल पास
(४) स्क्वेयर पास

१. थ्रू पास—जिस समय विपक्ष की रक्षा-व्यवस्था सुदृढ़ होती है और गेंद सुगमता से आगे नहीं बढ़ाई जा सकती, ऐसे समय में विरोधी रक्षक पंक्ति के बीच जो छोटा अथवा तंग मार्ग दिखाई देता है, उसी में से गेंद अपने साथी खिलाड़ी की तरफ सरका दी जाए या जोर से हिट मार कर उस तक पहुंचा दी जाए—इसी को थ्रू पास कहा जाता है। विपक्षी खिलाड़ियों के बीच में से वह लम्बा हिट भी मार सकता है या ड्रिब्लिंग करता हुआ कुछ आगे बढ़ कर फिर हिट करके 'ख' को पास दे सकता है।

२. क्रास पास—'पास' देने वाला खिलाड़ी जब गेंद की दिशा बदलने के उद्देश्य से दूसरे किनारे की ओर खड़े अपने साथी खिलाड़ी को गेंद देता है, उसे क्रास पास कहा जाता है।

क्रास पास एक तरह से अच्छा 'पास' समझा जाता है।

यदि राइट आउट विपक्षी गोल की ओर गेंद लेकर आगे बढ़ता है और आगे जाकर सामने की ओर लैफ्ट इन को पास देता है तो ऐसे पास को क्रास पास कहेंगे। खिलाड़ियों की स्थिति से आप समझ जायेंगे।

३. डायगनल पास जिस प्रकार एक चतुर्भुज के दो कोणों को मिलाने के लिए रेखा खींची जाती है, उसी तरह का एक 'पास' होता है। उदाहरण के लिए यदि कोई राइट इन या लैफ्ट इन गेंद लेकर बढ़ रहा है और वह मैदान के दूसरे बाजू में खड़े अपने साथी खिलाड़ी की ओर गेंद को इस प्रकार हिट करता है, जिससे गेंद आधे मैदान को पार करती हुई दूसरी ओर जाये, उसको डायगनल पास कहा जायेगा।

इसमें संदेह नहीं कि यदि खिलाड़ी सतर्कता से खेलें तो उनके डायगनल पास विरोधी टीम के लिए परेशानी का कारण बन सीधे-सीधे अपने सहयोगी खिलाड़ियों को। जाते हैं और साधारण तथा छोटे पास ह हैं। इस प्रकार के पास में गेंद की ग पर्याप्त तेज होनी चाहिए। यदि 'क' ने अ बढ़ कर 'ख' को पास दिया है, फिर 'ख' गेंद वापस 'क' की तरफ बढ़ा दी है। इ तरह एक दूसरे को गेंद स्क्वेयर पास द्वा देते हुए—आगे बढ़ाया जा सकता है।

'पास' किसी प्रकार का भी हो, अच खिलाड़ी को उसके उपयोग का ज्ञान होन आवश्यक है, किस समय, कब और कौन-स 'पास' काम में लेना है, यह निश्चय मैदा पर खिलाड़ियों को ही करना होता है। कित जोर से हिट किया जाए, क्या उसकी ग हो—यह सब भी उनकी सूझ-बूझ पर ह निर्भर करता है। पास द्वारा खेलते सम यह ध्यान रखना भी आवश्यक होता है वि आगे बढ़ने वाला खिलाड़ी कहीं 'आफ साइ न हो जाए। गेंद को जब हिट लगता है प्राप्त करने वाला खिलाड़ी यदि उस सम आफ-साइड नहीं है तो गेंद प्राप्त करते सम भी वह 'ऑफ साइड' नहीं हो सकता।

यह ध्यान रखना आवश्यक है कि जा प्रतिपक्षी टीम प्रतिरक्षक खिलाड़ियों के पीछे 'एक पर एक खिलाड़ी' लगा दे तो उन्हें लम्बे सीधे 'पास' देने चाहिएं और यदि प्रति-पक्षी प्रतिरक्षक टीम के क्षेत्र में हो तो फैली हु रक्षा-व्यवस्था के साथ छोटे 'पास' देक खेलना उपयोगी होगा।

अच्छे तथा उपयोगी 'पास' के लिए दो बातें महत्वपूर्ण हैं—एक तो अचूक निशाने बाजी और दूसरे सही अवसर क तत्क्षण निर्णय। गलत 'पास' देना एक ऐसी गलती है जो अन्य गलतियों के मुकाबले हानिकारक है।

यह ध्यान रहे कि 'पास' जितना निकट से दिया जाएगा वह उतना ही सही और अचूक होगा। लम्बे 'पास' में 'पास' प्राप्त करने वाला खिलाड़ी गेंद अपने तक पहुँचने से पहले अपने को सही स्थिति में कर लेता है। प्रतिपक्षी के हाथ लगे प्रत्येक 'पास' का अर्थ है कि दूसरी टीम ने गोल करने के उतने ही अवसर खो दिए। यही नहीं, उसके अब तक के सभी प्रयत्न व्यर्थ हो जाने हैं।

(क्रमशः)
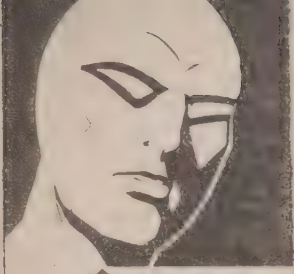
फैण्टम
हनीमून से वापसी
हनीमून···
शार्क···अब क्या करें ?
हो सकता है ये डाल्फिन उनका मुकाबला करें ! नहीं···इनका इरादा लड़ने का नही है···
हमारा ही पीछा कर रही हैं।

तैयार हो जाओ।
छलांग लगाओ !
डालफिन, ब्लेड जैसी तेज धार को पार करती हुई···

खतरनाक जगह को पार करने के बाद सुरक्षित स्थान लैगून में प्रवेश करते हैं।
!

डियाना तुम ठीक हो न ?
ओह··· हां··· एक मिनट के लिये तो मुझे इन शार्क मछलियों ने डरा ही दिया था !
जब तक डाल्फिन साथ में रहती हैं तो डरने की बात नहीं होती है।
शायद शार्क मछलियों को भी इस बात का पता होना चाहिये।

कमाल का हनीमून है ! सबसे पहले भूखे शेरों का हम पर हमला···

···फिर लुटेरे···
तुम्हारी दोनों रिवालवर और यह घोड़ा चाहिये।
मुझे तो यह लड़की चाहिये···

···और अब यह शार्क···
प्रिय तुम्हारे साथ रहने में तो मैं कभी भी बोरियत नही महसूस करती।

मम्मी को देखना चाहिये मुझे शेरों की सवारी करते हुए !
ईडनद्वीपपरहनीमून···
शायद वो तुम्हें इसतरह न देख सकें···उसका दिल कमजोर है···

ओऽऽऽऽ मैं गिरी !

अहा !
मैं फिर कोशिश करूं दोबारा इसी तरह गिर कर तुम्हारी बांहों में आने की।
डियाना तुम सचमुच बहुत सुन्दर हो !

दीवाना वर्ग पहेली 10 रु० इनाम जीतिये

संकेत बायें से दायें

१. चिड़ियों की थोड़ी चहचाहट के बाद उल्टी घड़ी के अन्त में खेनो का सामान हो तो रौनक पैदा हो जाती है ? (३-३)
५. भारी वजनदार आवाज ? (२)
६. लड़ने के लिये इस पर जाना पड़ता है ? (२)
८. पहले के साथ राई हो तो उस पर हमारा अधिकार नहीं रह जाता ? (३)
१०. ऐसी नदी जो रोटी नहीं सेक सकती ? (३)
१२. पिनखुवा में टूट पड़ने के लिये यह पड़ो ! (२)
१४. बगैर शुल्क का बहुत बढ़िया ? (३)
१५. आधे शहर में भड़कने वाला ? (२)

ऊपर से नीचे

१. लान कल बेच के रोटियाँ बनाई जा सकती हैं ? (३-३)
२. बाल जो उल्टे हट गये ! (२)

अन्तिम तिथि: २५ नवम्बर

३. दोनों ओर से पलना ? (३)
४. मार पीट के बाद अंग्रेजी रंग ? (३)
७. वोट न डालने के लिये कहना ? (२)
९. जब यह आ जाती है तो अनुकूल हो जाना है ? (२)
११. और बारीक होकर लौटना ? (३)
१३. यह मोटे पेट वाला आदमी हमसे बार-बार माग रहा है ! (२)

क्या समानता पहेलियां

१. तबला मास्टर और भैंस में क्या समानता है ?
२. बैंगन और ईमानदार आदमी में क्या समानता है ?
३. चमचे और बटलर में क्या समानता है ?
४. जनता सरकार और शीशे में क्या समानता है ?
५. शराब और योगविद्या में क्या समानता है ?

उत्तर—

१. दोनों ताल में डूबे रहते हैं ।
२. दोनों का भर्ता बनता है ।
३. दोनों मक्खन लगाते हैं ।
४. दोनों टूटने वाले हैं ।
५. दोनों आदमी को औंधा करता है ।

प्र० : साऊंड बैरियर या ध्वनि रोधक क्या होता है ?

विपिन शर्मा—चण्डीगढ़

उ० : साउँड बैरियर नाम वास्तव में वायुयान के एक विशेष गति पर चलने से उत्पन्न स्थिति का एक गलत नाम है। ऐसा समझा गया था कि जब वायुयान की गति ध्वनि तरंग की गति पर पहुंचेगी तो एक रोक उत्पन्न होगी, परन्तु ऐसी रोक की स्थिति पैदा ही नहीं हुई क्योंकि वायुयान के नमूने बनाने वालों ने ऐसे नमूने बनाये कि ये स्थिति पैदा ही न हो।

इस को समझने के लिये हमें वायुयान के सामान्य गति पर उड़ने से आरम्भ करना होगा। जैसे ही वायुयान आकाश में आगे को बढ़ता है उसका अगला भाग दबाव पीछे को फेंकता है ये दबाव वायुयान के आगे बढ़ने पर वायु के अणुओं द्वारा बनता है। पीछे पहुंचकर ये दबाव की तरंग-ध्वनि तरंग की गति से वायुयान के आगे जाती है। इस प्रकार ये वायुयान से भी तीव्र गति से चलती है जैसा कि पहले बताया था सामान्य गति से उड़ रहा है। जैसे ही दबाव तरंग आगे पहुंचती है वैसे ही वायु वायुयान के परों पर से निर्विघ्न चली जाती।

अब उस वायुयान को देखते हैं जोकि ध्वनि की गति से उड़ रहा है इस वायुयान के आगे कोई दबाव तरंग नहीं आती बल्कि वायुयान तथा दबाव तरंग एक ही गति से आगे बढ़ते हैं इसलिए दबाव वायुयान के परों के पास बन जाता है और इसके परिणाम स्वरुप एक धक्का वायुयान के परों पर अत्यधिक दबाव डालता है। जब वायुयान ध्वनि गति से नहीं उड़ पाते थे तो ऐसा समझा गया था कि इस गति को पार करते समय वायुयान को एक बैरियर को पार करना पड़ेगा जिसे साऊंड बैरियर का नाम दिया गया था परन्तु ऐसा कोई बैरियर उत्पन्न नहीं हुआ क्योंकि वायुयान के नमूने बनाने वाले कुशल इन्जीनियरों ने ऐसे नमूने बनाये जिसमें ये स्थिति उत्पन्न ही न हो।

लेकिन एक धमाके की आवाज वायुयान के ध्वनि गति को पार करने पर सुनाई देती है। ये ध्वनि ऊपर दिये गये धक्के के कारण पैदा होती है, जो कि वायुयान और दबाव तरंग की समान गति के कारण उत्पन्न होता है।

प्र० : सोना मूल्यवान क्यों होता है ?

दिनेश कुमार—रिवाड़ी

उ० : सोना एक मूल्यवान धातु है इसका इतिहास भी मानव इतिहास जितना ही पुराना है। आदिकाल के मानव भी सोने को मूल्यवान ही समझते थे सम्भवतः इसका कारण होगा कि मनुष्य द्वारा पाई गई यही सबसे प्रथम धातु होगी। सोने से आदिकाल के मनुष्यों के आकर्षण का कारण सोने का लगभग अपने शुद्ध रूप में पाया जाना भी हो सकता है। अर्थात सोना छोटे-छोटे डलों में पाया जाता है जिसमें दूसरी धातु या पत्थर इत्यादि मिश्रित नहीं होते। आदिकाल से ही सोने के सुन्दर पीले चमकीले रूप के कारण इस के आभूषण बनाये जाते हैं।

जैसे ही लोगों को पता चला कि सोने को हर रूप में आसानी से ढाला जा सकता है वैसे ही इसका मूल्य बढ़ना आरम्भ हो गया। सोने के डले को पीट कर कितना भी पतला बनाया जा सकता है क्योंकि लचक होने के कारण ये टूटता नहीं और इसीलिये आदिकाल के मानव भी इसे भिन्न रूप देने में सफल हुए होंगे। एक समय पर सोने से बाल बांधने के क्लिप बनाने का बड़ा चलन था तथा समझा जाता है इसको देख कर ही सोने के ताज बनाने की प्रथा चली होगी।

परन्तु धरती से मिलने वाले सोने की मात्रा बहुत ही कम है और इसे निकालना भी एक कठिन कार्य है इसलिए जो लोग स्वयं सोना नहीं निकाल पाते थे वे इसे दूसरों से अन्य वस्तुओं के बदले में ले लेते थे और इस प्रकार सोने से वस्तुएं बदली जाने लगीं। क्योंकि दूसरी वस्तुएं नष्ट हो जाती थीं परन्तु सोना कभी नष्ट नहीं होता था इसलिए लोगों ने इसे भविष्य में प्रयोग करने के लिए धन के रूप में रखना शुरू कर दिया।

सदियों बाद सोने के सिक्के भी बने इन सिक्कों का मूल्य धातु की शुद्धता तथा वजन से निर्धारित किया जाता था। इसके बाद बैंकों ने सुरक्षाहित सोने को बैंकों में जमा करना आरम्भ कर दिया। इस जमा करे सोने के बदले वो लिखित हुंडी देते थे कि मांगने पर लिखित मात्रा का सोना जमा करने वाले को देंगे। और इस से सरकार ने नोट और दूसरी धातुओं के सिक्के जारी किये। नोट भी मांगने पर सरकार द्वारा जितने का नोट हो उतना पैसा देने का वायदा ही होता है। धीरे-धीरे सोने के कम होने के कारण संसार भर में इसका मूल्य बढ़ गया तथा ये पीली वस्तु अधिक से अधिक मूल्यवान बन गई।

आपको जान कर आश्चर्य होगा कि समस्त संसार में निकाले गये सोने का आधा भाग अमरीका सरकार के खजाने में जमा है।

प्र० : बैंक कब आरम्भ हुए ?

प्रदीप कुमार होतवानी—रायपुर, म० प्र०

बैंक या महाजनी का व्यापार इतिहास जितना ही पुराना है। प्राचीन बेबीलोन, मिस्र तथा ग्रीस में महाजनी प्रचलित थी। वास्तव में इस काल में मन्दिरों को पैसा जमा करने के स्थान के रूप में प्रयोग में लाया जाता था। सन् २१० बी० सी० में रोम में एक अधिनियम जारी किया गया जिसके अन्तर्गत बैंक या महाजनी के लिये अलग स्थान बनाने का हुक्म हुआ।

आधुनिक बैंक सम्भवतः वेनिस में सन १८५७, में आरम्भ हुए, जब वहां बैंको-डी-रियाल्टो की स्थापना हुई। ये बैंक धन जमा करता था तथा जमा करने वालों को चैक लिखने की सुविधा प्रदान करता था। सन् १६१६ में बैंको-डल-जीरो ने इस बैंक का संचालन सम्भाला तथा ये बैंक सोने तथा चांदी के सिक्कों की हुंडी भी जारी करने लगा। ये हुंडियां धन के रूप में भी प्रयोग की जा सकती थीं। सन् १६०९ में स्थापित बैंक आफ आमस्टरडम धन की हुंडिया देने लगा, जिसे बैंक धन कहा जाता था।

इंगलैंड में सुनार ही अपने पास धन जमा करते थे जब तक सन् १६९४ में बैंक आफ इंगलैंड स्थापित हुआ। यहाँ सन् १८२५ तक जनता के धन का व्यापार करने वाला अकेला ही बैंक था।

अन्त में महाजनी ही बैंकों का पुरातन रूप था।

मूर्खतापूर्ण प्रश्नों के मूर्खतापूर्ण उत्तर

उत्तरों का तीसरा खाना खाली है उसमें आप अपने मूर्खतापूर्ण उत्तर लिखकर भेजें।

क्यों नहीं ? पहले जिनको कुर्सी का नशा चढ़ा है उन्हें कुर्सी समेत उठाकर हिन्दमहासागर में फेंका जाये तो।

क्यों नहीं ? उसी तरह सफल होगी जैसे सरकार की सोना बेचने की नीति सफल हुयी।

रमेश घर वाले मेरी शादी की बातचीत चला रहे हैं ! तुम कुछ नहीं करोगे ?
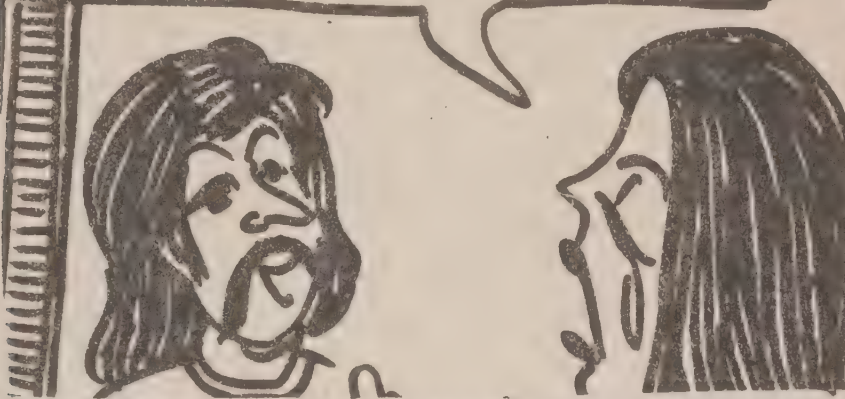
करूंगा क्यों नहीं ? विविध भारती को गम के गानों की फर्माइश भेजूंगा।

उस बेवकूफ को जाकर देख आऊंगा जो तुम से शादी करने पर राजी हो गया है।

राकेश, हाथ पकड़ने का मतलब जानते हो ?

क्यों नहीं ? अब तुम मेरी जेब नहीं काट पाओगी।

क्यों नहीं ? मैं जान सकता हूं कि तुम्हें बुखार है या नहीं !

शीला, यह क्या तुम स्वैटर बुन रही हो ?
नहीं, यह दो सलाइयां आपस में चोंचें लड़ा रही थीं। मैं इन में सुलह करवाने में लगी हूं।
नहीं, आलू रखने के लिए ऊन का बोरा बुन रही हूं।
तुम्हारी नाक लाल है और छींकें आ रही हैं तुम्हें जुकाम तो नहीं हो क्या ?
आऽऽऽ ऽऽऽऽ
नहीं, जुकाम तो अगले हफ्ते आयेगा ! आज तो रिहर्सल कर रहा हूं।
नहीं, मैं नाक पर लाल रंग लगाकर पक्के राग गाने की प्रैक्टिस कर रहा हूं।
तुमने आज इतनी देर कहां लगा दी ?
रास्ते में मुझे इन्दिरा गांधी मिल गई वह देश के भविष्य के बारे में मुझ से बात करती रहीं ?
रास्ते में मुझे मंगल ग्रह का वासी मिल गया वह धरती के बारे में मुझ से पूछता रहा।
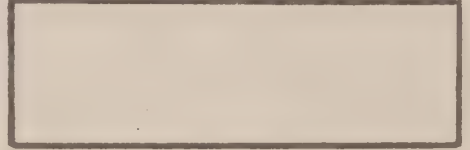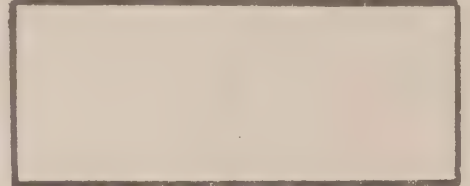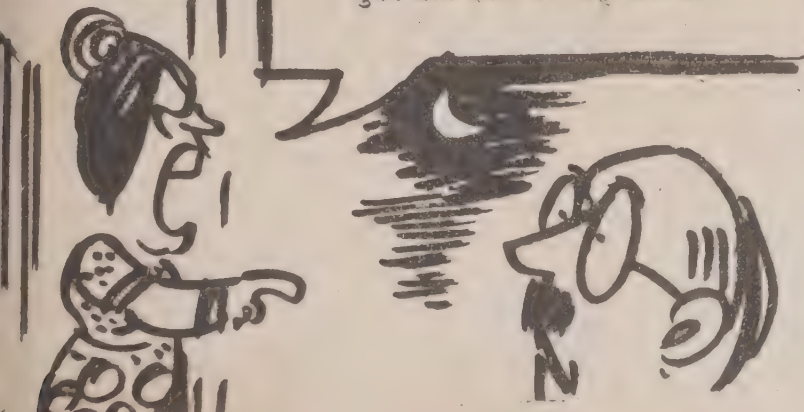
'हास्य बाल कथा'
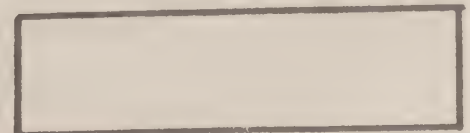
देसी घी का हलुवा

रईस खां

पंडित अशरफी लाल जो विद्या पीठ स्कूल के बहुत होशियार और उम्रदार अध्यापक थे। इसलिये लोग उनका नाम न लेने की वजह से सिर्फ उन्हें 'पंडित जी' कहते थे। एक दिन जब पंडित जी स्कूल में पहुँचे तो काफी प्रसन्न मुद्रा में थे। हर विद्यार्थी से बड़े प्रेम भाव से व्यवहार कर रहे थे। उसी स्कूल में पंडित जी का एक शिष्य चन्दू भी था। चन्दू ही शैतान लड़का था। आज वह पंडित जी को प्रसन्न मुद्रा में देखकर आश्चर्य में पड़ गया, कि लड़कों की खोपड़ी से तेल निकालने वाले पंडित जी आज मोम क्यों बने हुये हैं? चन्दू ने आव देखा न ताव और पंडित जी के पास पहुँच गया और बोला 'मास्टर साहब, कृपा दृष्टि हो, आज आप काफी स्वस्थ्य नजर आ रहे हैं।' 'हाँ बेटे चन्दू' पंडित जी भाव विह्वोर होते हुये बोले, 'आज हम मानसिक दृष्टि से काफी प्रसन्न हैं, इसलिए हमारे चेहरे से प्रसन्नता के कण दृष्टि गोचर हो रहे होंगे'। 'राम भला करे, आप यूं ही सदा प्रसन्न रहें तो हमारे विद्यालय जीवन के कुछ और क्षण अति प्रसन्नता से बीतेंगे, वैसे अगर आप बुरा न मानें तो एक बात पूछूं साहब', 'अवश्य पूछो, हर शिष्य का परम कर्त्तव्य होता है कि वह गुरु के भी सुख-दुख का कारण पूछे। पंडित जी को ज्यादा ही खुशी में नाचते देख चन्दू ने हिम्मत बाँधते हुये पूछा, 'सा'ब, क्या आज आपकी खुशी की कोई खास वजह है?' 'बिल्कुल, आज तुम्हारी मास्टरनी छः साल बाद मायके से लौटी हैं।' 'छः साल बाद...।' चन्दू विस्मय से बोला।'हाँ। और वह हमारे लिए अपने हाथ से बना कर लायी हैं—देसी घी का हलुवा।' 'इसका मतलब आज आप देसी घी का हलुवा खाकर आये हैं।' 'नहीं, खाने का अवकाश ही कहाँ मिला, सो एक डिब्बे में साथ ले आये, सोचा पाठशाला में आराम से बैठ कर, छः साल बाद मास्टरनी के हाथ से बने हलुवे का आनन्द लेंगे।'

अब तो चन्दू के मुह मे राल टपकने लगी कि देसी घी का हलुवा और वह भी बड़े प्यार से बना हुआ पंडित जी अकेले चट कर जायें। यह कैसे हो सकता है? इसलिए......? और तभी चन्दू के दिमाग में एक तरकीब सूझी, उसने सोचा प्रिंसिपल सा'ब उससे काफी दिनों से नाराज हैं क्यों न उन्हें ही खुश कर दिया जाये।...'और वह फौरन पंडित जी की साईकिल के पास पहुँचा। जिसमें मोटी खद्दर का एक मैला सा थैला टंगा था और उसमें कुछ भारी सी चीज नजर आ रही थी। चन्दू ने इधर-उधर देख के लपक कर थैले में से डिब्बा निकाल लिया और सीधा प्रिंसिपल रूम में पहुँच गया।

प्रिंसिपल सा'ब ने पहले तो चन्दू से गर्मी से बात की लेकिन जब चन्दू ने बताया कि आज उसका जन्म दिन है और उसकी माँ ने यह देसी घी का हलुवा उनके लिए भेजा है तो प्रिंसिपल सा'ब की नाक के साथ आँखें भी डिब्बे पर जम गयीं जिसमें देसी घी का हलुवा अपनी कयामत की घड़ियां गिन रहा था। पहले तो प्रिंसिपल सा'ब ने दिखावटी मना किया मगर चन्दू के दोबारा कहने पर झट से लेकर रख लिया।

इन्टरवल में जो पंडित जी ने थैले में हाथ डाला तो हाथ खाली ही वापस आ गया। यह देख पंडित जी का पारा सातवें आसमान को छूने लगा और अब तो वह एक-एक शैतान लड़के के सामने दो फुट डंडा लिये नजर आ रहे थे। लड़के भी पका गये थे। अभी थोड़ी देर पहले जो जी का पारा जोरो डिग्री पर था, अब यक थर्मा मीटर तोड़ कर बाहर क गया। दो एक चपरासी पंडित जी के पर लड़कों की तलाशी लेने में लगे हुये मगर डिब्बा क्या मिलता। आखिर थ कर पंडित जी प्रिंसिपल के पास प पंडित जी प्रिंसिपल रूम में कदम रख वाले थे कि उनकी नाक में जानी-पह खुशबु के कीटाणु आक्रमण करने लगे।

पंडित जी ने अन्दर घुसते ही प्रिंसिपल सा'ब हलुवे पर डटे पड़े हैं तो पंडित जी आग बबूला हो गये और मे बोले, 'बड़ी लज्जा की बात है हैड म सा'ब, अगर आपको हलुवा खाना ही था हमसे तो पूछ लेते।' पंडित जी का रंग देखकर प्रिंसिपल सा'ब का हा हलुवा हाथ में और मुंह का हलुवा रह गया और आश्चर्य से बोले आ कैसी बातें कर रहे हैं पंडित जी, यह और आप...' 'क्योंकि यह हलुवे का मेरा है और...आप, 'आपका?' मगर हलुवा तो हमारे एक विद्यार्थी ने हमें जन्म दिन पर दिया है। 'आपके वि ने...?' पंडित जी मुँह बनाके बोले। 'जी ऐ...क्या नाम है उसका...हाँ चन्दू, च पंडित जी उछल पड़े जैसे उन्हें करेंट हो और फिर वहीं सिर पर हाथ र बैठ गये।

मदहोश
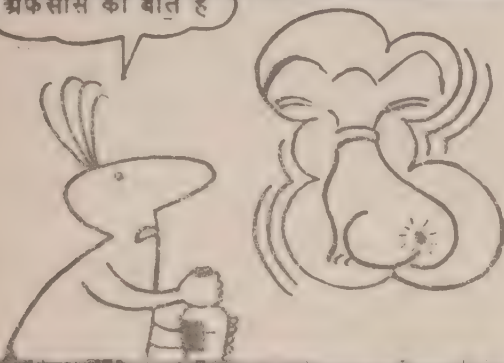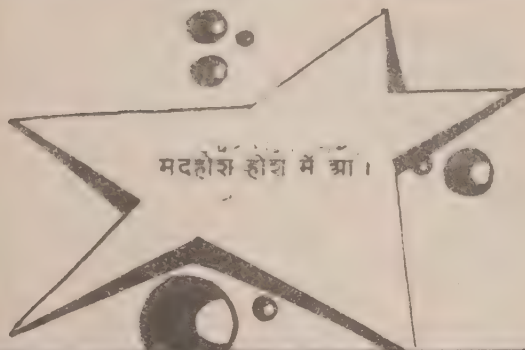
दीवाना कैमल रंग भरो प्रतियोगिता नं० ४ का परिणाम

प्रथम पुरस्कार—कुमारी रनी अस्थाना, द्वारा मि० जे० बी० अस्थाना, २३, एम. जी. मार्ग, इलाहाबाद।

द्वितीय पुरस्कार—राजेन्द्र चोपड़ा, ८३-ए, गुरु नानक नगरी पटेल चौक, जालंधर।

तृतीय पुरस्कार—मास्टर अजयराय सुपुत्र श्री भानू राय, ब्रिटिश हाई कमीशन, एम० ओ० डब्ल्यू०, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली।

कैमल आश्वासन पुरस्कार

१. दीपक वर्मा, ३०/१३२, निराला-बाद, पीपल मंडी, आगरा। २. हरविन्दर पाल सिंह कालिया, के-३८, कोटला मुबारक पुर, नई दिल्ली—३। ३. कुलभूषण कटारिया, फ्लेट नं० ११/१, रेलवे कॉलोनी, किशनगंज दिल्ली। ४. प्रदीप कुमार बमल द्वारा जयप्रकाश कबाड़ी, घनश्याम पुरा, गढ़ रोड, हापुड़। ५. अतुल शर्मा, के-एफ ८५, नया कवि नगर गाजियाबाद।

दीवाना आश्वासन पुरस्कार

१. बेबी उपवन, १—ए, राधास्वामी रोड, आदर्श सिनेमा के पास, अमृतसर।

२. कुमारी मालनी देवी माया, ए-१८, पिछला दरवाजा, गांधी नगर, ग्वालियर।

३. सुनील एस० गिडवानी, बिल्डिंग नं० ७, फ्लेट नं० १०६, दौलत नगर, थाना।

४. द्वारकानाथ मुरकरा, सेन्ट्रल स्कूल बालेश्वर, उड़ीसा।

५. दीपक कुमार गुलाटी सुपुत्र श्री रामनाथ जी गुलाटी, पचायत समिति, छिलवाना, जि० नागौर (राजस्थान)

सर्टीफिकेट

१. अक्षय पाराशर—नई दिल्ली, २. स्वर्ण सिंह—नई दिल्ली, ३. अनिल कुमार मेहता—फरीदाबाद, ४. के० नयना खिलदास—उल्हासनगर, ५. के० रामचन्द्र राव—जमशेदपुर, ६. परमिन्दर सिंह "पिन्कम" अमृतसर, ७. राजीव कुमार-नई दिल्ली, ८. अनिता करनानी-कलकत्ता, ९. संजीव नागपाल-शाहदरा, दिल्ली, १०. सैयद [illegible]नुल मुस्ताख रिज़ा इलाहाबाद।

परिणाम

अंक नं० ३४ में प्रकाशित गुमनाम का परिणाम

गुमनाम का विजेता: बिरेन्द्रा — गोरखपुर

दीवानी बात: तुम्हारे साथ लड़का बन कर दोस्ती तो निभा नहीं सका अब लड़की बनकर ही देख लिया जाये

अंक नं० ३५ में प्रकाशित गेंद ढूंढो का हल

विजेता: हेमन्त राव-नई दिल्ली

मन के लड्डू
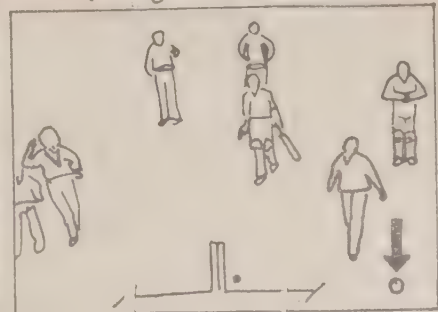
—गुस्ताव वाइड

वे एक टीले के पास बैठ गए। बड़ा मनमोहक और सुहावना सायंकाल था। उनके सिरों के ऊपर फलों से लदी शाखाओं ने छाया कर रखी थी। उनकी पीठ के पीछे पीली-पीली मिट्टी से निकला हुआ एक समतल पत्थर मूर्ति की तरह खड़ा था। एक पुरानी गाड़ी से निकला हुआ तख्ता जिसका रंग उड़ चुका था, उनके लिए बेंच का काम दे रहा था। शाखाओं की झिलमिल में से समुद्र तक फैली हुई हरियाली, विशाल नीला समुद्र, लहरें—सब कुछ उन्हें दे रहा था।

दिन के कोलाहल से दूर, एकान्त और शान्त वातावरण में दोनों बैठे थे। समुद्र की सैर करते-करते वे वहाँ आ पहुंचे थे। कुछ देर के लिए वे यहाँ बैठ गए थे। पुरुष ने बातचीत आरम्भ की :

'हाँ, यह वह स्थान है, जहाँ हमारा मकान बनना चाहिए। मकान की दीवारें इस प्रकार श्वेत होनी चाहिएं जैसे ऊपर बर्फ दिखाई दे रही है। छत छप्पर की बनी होनी चाहिए। गुलाब और चमेली की शाखाएं द्वार और खिड़कियों से लिपटी होनी चाहिएं।

स्त्री बोली, 'हां, खिड़कियों में पुराने ढंग के हरे शीशे लगे होने चाहिएं। दीवार के साथ, द्वार के ऊपर, हम एक बड़े जंगली हिरन का सींग लगा देंगे। चिड़ियां हमारी छतों पर घोंसले बनाएंगी। सारस भी ग्रीष्म में छत के ऊपर आ जायेंगे।'

पुरुष ने कहा, 'पर सारस यहाँ कैसे रहेंगे? उनके खाने-पीने का तो यहाँ कोई प्रबन्ध है नहीं। न यहां कोई मैदान है, न दलदल।'

स्त्री निश्चयपूर्वक बोली, 'कुछ भी हो, सारस यहाँ अवश्य होने चाहिएं। मैं उन्हें हर सायंकाल उड़कर अपने घोंसलों में आते देखना चाहती हूं। वे अपने बच्चों को देख कर अपनी लम्बी-लम्बी और पतली-पतली टांगों पर नाचेंगे। वे अपने पंख फड़फड़ाएंगे। तब ऐसा लगेगा कि वे आंगन में मुंह के बल अब गिरे कि अब गिरे। मैं यह दृश्य देखकर खूब हंसना चाहती हूं।'

'अच्छा तो हम एकाध सारस भी रख लेंगे, पर उनके बच्चे नहीं रखेंगे। उन पर बहुत अधिक व्यय होता है। हम एक हरा-सा तोता भी पालेंगे। उसका पिंजरा भोजन करने वाले कमरे में रखेंगे। जब हम चा[illegible] पीने के कमरे में जाएंगे तो वह तुम्हें क[illegible] करेगा, 'माता जी, नमस्ते'।'

स्त्री ने अपना सिर हिलाते हुए कह[illegible] 'हां, तोता अवश्य रखेंगे। पर एक नन्हा-[illegible] बच्चा भी साथ होना चाहिए।'

पुरुष ने मुस्कराते हुए कहा, 'पर हो[illegible] छोटा-सा ही चाहिए।'

स्त्री बोली, 'हां, बिल्कुल नन्हा-सा बस, इतना-सा।' उसने अपनी उंगलियों [illegible] उसका आकार भी बनाया।

पुरुष ने कहा, 'खाने के कमरे [illegible] दीवारों का रंग हरा होना चाहिए। अल्मा[illegible] में भिन्न-भिन्न प्रकार के बर्तन और थालि[illegible] होनी चाहिएं। कुर्सियाँ भी हरे रंग की हो[illegible] चाहिएं उनकी पीठ पर फूल-पत्ते भी [illegible] होने चाहिएं। एक कोने में एक हरे रंग [illegible] मेज पर पुराने ढंग की चाँदी की चायदा[illegible] और प्यालियाँ भी होनी चाहिएं।'

स्त्री बोली, 'एक हरे रंग की बड़ी-[illegible] घड़ी भी होनी चाहिए, जिस पर चित्रका[illegible] हो रही हो।'

पुरुष ने कहा, 'घड़ी पर आदम औ[illegible] हव्वा के चित्र के साथ सूर्य के नील नदी [illegible] अस्त होने का चित्र होगा। पीछे वाले कम[illegible] में तीन खिड़कियां होंगी, जिनसे बाहर देख[illegible] पर दृष्टि पेड़ों की चोटियों को पार करत[illegible] हुई समुद्र तक जा पहुंचेगी।'

'पर उसमें से धूप बहुत आएगी। प्रा[illegible] से दोपहर के बाद तक कमरा धूप से भ[illegible] रहेगा।

'नहीं, खिलाड़ियों के आगे छज्जे ल[illegible] होंगे। उन पर सुगन्धित फूलों से ल[illegible] लताएं चढ़ी होंगी। इस प्रकार धूप अन्द[illegible] नहीं आ सकेगी। इस प्रकार कुछ लम्बी औ[illegible] सुनहरी किरणें कमरे के फर्श और दूस[illegible] वस्तुओं पर पड़ती रहेंगी। कमरे के मध्य [illegible] एक आबनूस की गोल मेज होगी, जिस[illegible] पांव शेर के पंजों की तरह भारी होंगे [illegible] उसके पास छोटी-छोटी कुर्सियां होंगी। कम[illegible] में एक ओर पियानो रखा होगा। मध्य [illegible] मेज पर एक बड़े थाल में पुष्पों और पत्त[illegible] का गमला सजा रहेगा।'

'पर मेरे सीने-पिरोने की मेज कह[illegible] होगी?'

'तुम्हारे सीने-पिरोने की मेज?—मध्[illegible] वाली खिड़की के पास। उसके ऊपर नीले

शेष पृष्ठ ३८ पर

अरे तुम कुन्दनलाल ? इतने दिनों तक किस गुफा में छिपे रहे ? और यह तुमने कैसे अजीब से कपड़े पहन रखे हैं ?
इतने दिन मैं शहर में एक जादूगर के पास था। वह मुझे अपने हैट से निकालने का खेल किया करता था। यह ड्रेस जादूगरों वाली है।
जादूगर के साथ रहते-रहते मैं भी जादू के कुछ ट्रिक उसे देखते-देखते सीख गया। अब मैं जादू के वही खेल दिखा कर जंगल के जानवरों में अपने हुनर का तहलका मचाने आया हूँ। आज तक किसी जानवर ने मैजिक शो नहीं किया होगा।
चन्द रोज में ही मेरी मशहूरी जंगल के राजा शेर तक भी पहुंचेगी। शेर के दरबार में खेल दिखा कर सबको चकित कर दूंगा। शेर मुझे सर का खिताब देगा और अपने नवरत्नों में शामिल कर लेगा। पहले मैं शेर के पी. ए. भालू पर अपने जादू का रौब जमाऊंगा।
अपना यार दरबार में लग गया तो एप्लीकेशन फार्म वगैरह मिलने में आसानी रहेगी।
आबराक डाबरा का टाबरा ! यह देखिये साहेबान जादू की छडी फेरते ही पान की दुक्की चौकी में बदल गई।
पहले दो बिन्दियां थीं अब चार हो गयीं तो फिर क्या हुआ ?
पंचतंत्र
मान गये न आप मुझे ?
मैं क्यों मान लूं तुझे ?
वाह जनाब, आपके सामने मैंने जादू का इतना बढ़िया खेल दिखाया आपने अपनी आंखों से देखा, पहले दो बिन्दियां थीं, जादू का डंडा लगते ही दो की चार हो गयीं और आप कहते हैं कि क्यों मान लूं तुझे।
बिन्दियां दो चार या चार सौ भी बन जायें तो मुझे क्या फर्क पड़ा ?
नामाकूल कम्बख्त, तू मुझे बेवकूफ बनाता है ? दुक्की की चौक्की बना दी। मैं पूछता हूं तूने पंजी या सत्ती क्यों नहीं बनाई ? क्यों बनाई चौक्की ? मेरी बात का जवाब दे वर्ना तेरी चटनी बनाता हूँ अभी ?
(शिक्षा—अपनी कला का प्रदर्शन हमेशा कद्रदानों के बीच ही करना चाहिये। ऐरे-गैरे नत्थू खैरे के सामने करने पर लेने के देने पड़ सकते हैं।
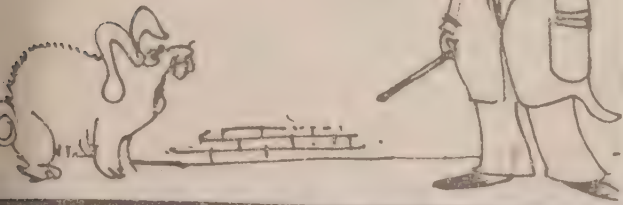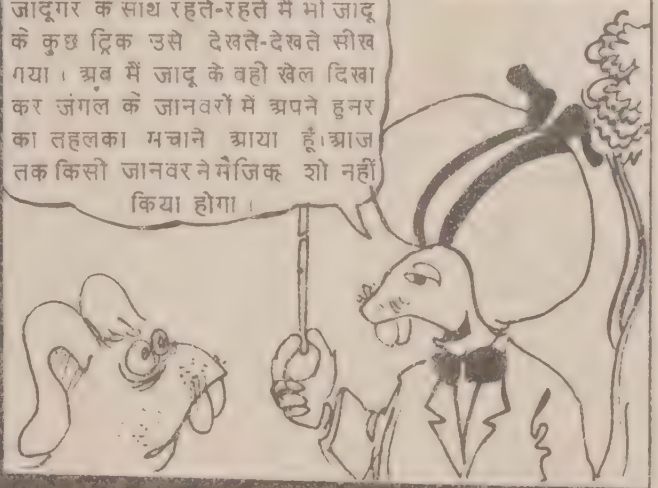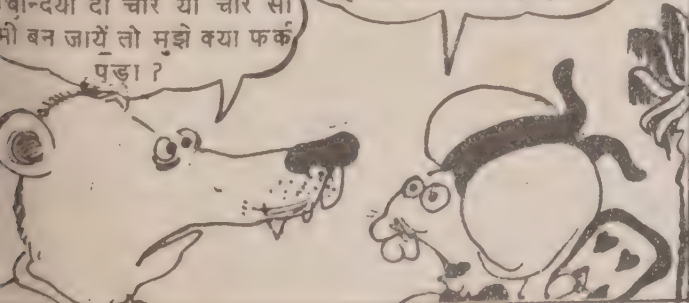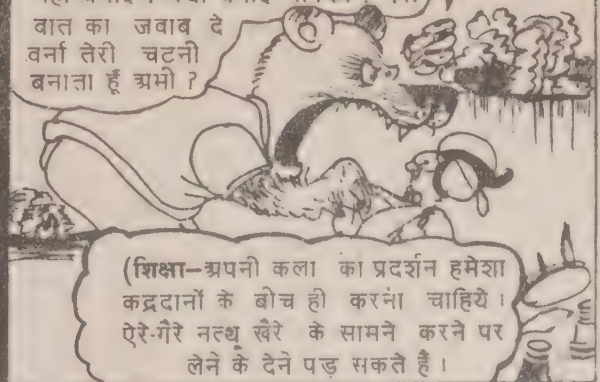
पृष्ठ ३६ से आगे

ग्रौर अंगूरी रंग के सलमे-सितारे रखे रहेंगे। खिड़की में गुलाब ग्रौर चमेली की बेलें होंगी। शीशे के लम्बे लम्बे फूलदानों में से नरगिस के श्वेत फूल तुम्हें देखकर मुस्कराएंगे। शीशे के एक बड़े बरतन में रंग-बिरंगी मछलियां तुम्हारे हाथों से रोटी के टुकड़े लेकर खायेंगी। ग्रौर हां, कबूतर भी होने चाहियें—बर्फ की तरह श्वेत, ग्रौर समुद्र की तरह नीले कबूतर—जब तुम ग्रांगन की सीढ़ियों में लताग्रों के नीचे खड़ी होगी तो वे तुम्हारे सिर के चारों ग्रोर चक्कर लगायेंगे। वे कभी तुम्हारे सिर ग्रौर कन्धों पर, कभी हाथों पर ग्राकर बैठ जायेंगे। वे तुम्हारे हाथों से दाने ले-लेकर खायेंगे। तुम शुद्ध-श्वेत वस्त्र पहनकर, ग्राधी बाहों वाली कमीज, पीली जुराबें पहने ग्रौर लाल मूंगे का एक कोमल हार गले में डाल कर, उनका तमाशा देखा करोगी।'

स्त्री फिर कहने लगी, 'विश्राम करने का कमरा कैसा होगा? तुम्हारे ग्रध्ययन करने का कमरा कैसा होगा?

पुरुष ने उत्तर दिया, 'विश्राम करने के कमरे की दिशा पूर्व की ग्रोर होनी चाहिए। उसके बाहर कोमल-कोमल ग्रौर हरी-हरी घास होनी चाहिए। उस पर बेंत की शाखाग्रों को मोड़कर बनाई हुई कुर्सियां ग्रौर मेजें होनी चाहिएं। हमारे ग्रतिथियों के लिए टेनिस का प्रबन्ध भी होना चाहिए। एक तिपाई पर दो फुट लम्बी दूरबीन भी रखी रहनी चाहिए, ताकि हम समुद्र पर जलपोतों को ग्राते-जाते देख सकें।'

स्त्री ने पूछा, ग्रौर मेरे उठने-बैठने का कमरा?'

पुरुष ने कहा, 'यह तुम स्वयं ही निश्चय कर लो, क्योंकि वह तुम्हारा कमरा होगा।'

स्त्री बोली, 'नहीं, यह भी तुम ही बताग्रो।'

पुरुष ग्रपना सिर हिलाकर परामर्श देने लगा, 'श्वेत, हां, श्वेत कुर्सियां, जिनके कोमल पायों पर सुन्दर सुनहरी चित्रकारी हो। उनकी बाहों ग्रौर पीठ पर रेशमी कपड़े चढ़े होने चाहियें, ऐसा रेशम जिसकी पीली-पीली तहों पर बेल-बूटे छपे हों। झूठे सोने की गोल-गोल कीलों से उनको जड़ा गया हो। सब दीवारें सचित्र कागजों से ढकी होनी चाहियें। सुनहरी कागज से ढके पर्दे भी [illegible] के होंगे। ये सब उसी रंग के होंगे जिस रंग का फर्नीचर होगा। मध्य की मेज सबसे ग्रधिक गोल होगी। उसके ऊपर चित्रकारी की गई होगी। मेज के ऊपर एक ग्रमूल्य झाड़फानूस लटक रहा होगा, जिस पर बिल्लौर ग्रौर मोती जड़े होंगे; वे सितारों की तरह चमकेंगे।'

'ग्रौर हमारी अंगीठी?'

'नहीं, अंगीठी की कोई ग्रावश्यकता नहीं, क्योंकि हम केवल बसन्त ग्रौर ग्रीष्म ऋतु में यहां रहेंगे। शरद ग्रौर जाड़े में हम किसी ग्रौर स्वास्थ्यप्रद स्थल पर चले जाया करेंगे।'

स्त्री बोली, 'फिर तो बस तुम्हारे ग्रध्ययन का ग्रौर सोने का कमरा रह गया।'

मेरा कमरा पश्चिमी कोने में होगा, जहां से मैं मीलों तक पहाड़, वादियां, जंगल ग्रौर सायंकाल की लाली में नहाई हुई झील को देखा करूंगा। इसमें एक बड़ी-सी ग्रौर गोल-सी घड़ी लटकी रहेगी। उसके सामने एक भारी पर्दा लटका रहेगा। कमरे में भेड़ियों ग्रौर रीछों की खालें बिछी रहेंगी। उसमें शीशम की लकड़ी का फर्नीचर होगा ग्रौर दूसरी सामग्री से सुसज्जित होगा। कमरे में चमकीले वस्त्र पहने राष्ट्र के शूरवीरों के चित्र लटके रहेंगे। दीवारों के साथ तलवारें, बन्दूकें ग्रौर ढालें लटक रही होंगी। इन वस्तुग्रों के ग्रतिरिक्त इस कमरे में एक गुप्त द्वार होगा। जब तुम्हारा जी चाहे, बटन दबाना ग्रौर पुस्तकों की ग्रलमारी तुम्हारे ग्रागे से हट जाएगी। उस स्थान पर गुप्त द्वार होगा।'

स्त्री ने कांपते हुए पूछा, 'ग्रोह, मगर यह द्वार किस तरह खुलेगा।'

'नीचे एक सुरंग होगी, जो तुम्हारे कमरे की ग्रोर जाएगी, जहां तुम विश्राम कर रही होगी। तुम लेटकर प्रतीक्षा किया करोगी। एक छोटा-सा लैम्प तुम्हारे सिरहाने वाली संगमरमर की मेज पर जल रहा होगा। तुम बाहर अंधेरे में कुछ देख रही होगी। तुम वहां पर बहुत देर तक पुस्तक पढ़ सकोगी। पर इस समय वह पुस्तक तुम्हारे सम्मुख बिस्तर की श्वेत चादर पर पड़ी होगी। तुमने ग्रपनी दोनों बाहों द्वारा ग्रपना सिर तकिए से जरा ऊंचा कर रखा होगा। तुम मेरे पांव की ग्राहट पर कान धरे ग्रपनी बड़ी-बड़ी स्वप्निल ग्रांखों से बाहर की ग्रोर देख रही होगी। फिर तुम गुप्त द्वार खुलने की ग्रावाज सुनोगी, मुस्कराकर तुम ग्रपनी कुहनी का सहारा लिये जरा उठकर फिर खटके पर ध्यान लगाग्रोगी। तुम्हें मेरे दबे पांव चलने की ध्वनि समीप से समीपतर ग्राती सुनाई देगी। शीघ्रता से तुम पुस्तक मेज पर रख दोगी। फिर तुम तकिए पर सिर रखकर ग्रपनी ग्रांखें बन्द कर लोगी।

इस प्रकार टीले के समीप बैठकर वे दोनों विचार-मग्न थे। बसन्त की एक सुहावनी सायंकाल थी। फल ग्रौर फूलों से लदी टहनियों ने उन पर छाया कर रखी थी। उनकी ग्रांखें झूमते हुए हरे-भरे पेड़ों ग्रौर समुद्र की लहरों के साथ खेल रही थीं। लहरें सरसराहट के साथ किनारे से टकरा रही थीं।

सूर्य पश्चिमी पहाड़ के पीछे छिप गया ग्रौर ग्रोस पड़ने लगी। तब पुरुष ग्रपने स्थान से उठा ग्रौर कहने लगा—

'मेरा विचार है कि ग्रब घर चलना चाहिए। तुम्हारी मां चाय के लिए हमारी प्रतीक्षा कर रही होंगी।'

वे दोनों चुपचाप उठ बैठे। एक विचित्र-सी थकान उनके चेहरों पर स्पष्ट दीख रही थी। धीरे-धीरे वे जंगल में चलने लगे। उन्हें रेलवे स्टेशन पहुंचना था।

एकाएक स्त्री बोली, 'मेरी तो यह इच्छा हो रही है कि हम खाना इसी स्थान पर खायें।'

पुरुष ने जरा उपेक्षा से उसका सिर घुमाकर कहा, तुम्हें ग्रच्छी तरह मालूम है कि...'

स्त्री ने शीघ्रता से उत्तर दिया, 'हां, हां, मैंने यूं ही बिना सोचे-समझे कह दिया था। हम पहले ही बहुत ग्रधिक व्यय कर चुके हैं।'

ग्रब वे फिर चुपचाप चलने लगे।

जब पुरुष स्टेशन की उस खिड़की के पास खड़ा हुग्रा, जहां टिकट मिलते हैं, तो वह जरा घबरा-सा गया। फिर स्त्री की ग्रोर मुंह फेरकर उसने कहा, 'मेरा विचार है कि हम तृतीय श्रेणी में यात्रा कर लें।'

स्त्री ने ग्रावेश में ग्राकर कहा—

'हां-हां, ठीक है। इस समय तो गाड़ी में ग्रधिक भीड़ भी नहीं होती ग्रौर इस प्रकार हम नकद एक रुपए की बचत कर लेंगे।'

हमसे पूछिये तो हम यही कहेंगे कि अफवाहों पर ध्यान न दीजिये पर······

सवाल यह है?

कि जनता पार्टी सरकार में क्या अफवाओं और हकीकतों में अधिक अन्तर रह गया है ? आज के हालात क्या हैं ? जरा इनकी एक झलक नीचे देखिये ।

इस पृष्ठ पर अगले सप्ताह एक और लाजवाब सवाल देखिये ।

सन्यासी विनोद खन्ना से एक जाली इन्टरव्यू

हाल में ही विनोद खन्ना ने फिल्मों से संन्यास लेने की घोषणा की है—इस बारे में हमारे पत्रकार ने सपने में विनोद खन्ना से इन्टरव्यू लिया उसका दीवाना ब्यौरा।

प्र० : विनोद जी समाचार-पत्रों में छपा है कि आप फिल्मों से संन्यास ले रहे हैं क्या यह सच है?

उ० : अगर झूठ ही हो तो भी कौन-सी मुझ पर दफा ३०२ लागू होगी।

प्र० : आपने ऐसा निर्णय क्यों लिया?

उ० : एक दिन मैं विचारों में रात को खोया था, मुझे लगा कोई मुझे बुला रहा है। फिल्मी बंधन तोड़ अपनी शरण में आने की दावत दे रहा था।मुझे लगा जैसे मैं गदगद हो गया हूं, तभी मैंने फिल्म छोड़ने का निर्णय कर लिया।

प्र० : आपने खोजबीन की कोशिश नहीं की। हो सकता है उस रात आपके पड़ौसी का कुत्ता बाहर रह गया हो और रात को याद आने पर वह अपने कुत्ते को बुलाता रहा हो! खैर, आप फिल्में छोड़ने के बाद क्या करेंगे?

उ० : कुछ भी नहीं करूंगा।.

प्र० : फिल्मों में ही रहते तो भी कौन-सा आपने तीर मार लेना था? क्या आप आचार्य रजनीश के आश्रम में स्थायी रूप से रहेंगे?

उ० : मैंने जिन्दगी में जो कुछ पाया है वह आचार्य रजनीश जी की ही मेहरबानी से पाया है! वह सचमुच में ही भगवान हैं।

प्र० : तभी तो दुनिया की हालत खस्ता हो रही है। भगवान तो एक आश्रम खोलकर दुनिया में ... दुनिया का भार उन्होंने अपने पी... क्लर्कों के ऊपर छोड़ रखा होगा ... पता है कि उनके आश्रम खोलने ... खानों में पागलों की तादाद क... है? लोग पागलखाने जाने की ... चले जाते हैं! आपकी पत्नी ... फिल्में छोड़ने की सलाह दी?

उ० : कौन पत्नी? मैं खुद पत्नी... वान रजनीश मेरे पति हैं औ... पतिव्रता पत्नी हूं।

(नोट : हमारा पत्रकार और प्रश्... ही रहा था कि विनोद ने रजनी... चनों का टेप लगा दिया और उन... चीखचीख कर नाचने लगा। ब... वह अपने बाल नोचता जाता थ... मुंह से सफेद झाग निकलने लगी... आंख खुल गई)।

तुम मुझे मिलीं वरदान! प्रिये

—शिवांशु शाहजहांपुरी

जप, जोग, तपस्या के बल पर, तुम मुझे मिलीं वरदान! प्रिये।

तुम जन्म-जन्म की साथी हो,
ऐसा पण्डित जी कहते हैं।
बस इसीलिए है! मृगनयनी,
हम हिले-मिले से रहते हैं।
तुमने हमको चाहा होगा,
हमने तुमको चाहा होगा।
हम दोनों ने, फिर मिलने का,
हंस-कर इकरार किया होगा।

मैं तेरा हूं सौभाग्य चिन्ह, तू मेरा जीवन प्राण! प्रियें।
जप, जोग, तपस्या के बल पर, तुम मुझे मिलीं वरदान! प्रिये॥

हम तुम दोनों नव-दम्पति हैं,
फिर सैर-सपाटा हो जाये।
तुम कहो समुन्दर पार चलें,
अथवा पहाड़ पर हो आयें।
यह प्रेम-प्रीति का नाटक है,
हम तुम दोनों अभिनेता हैं।
होती न इस में हार-जीत,
दोनों ही यहाँ विजेता हैं।

तुम जब से मेरे घर आयीं, बढ़ गया मेरा सम्मान! प्रिये।
जप, जोग, तपस्या के बल पर, तुम मुझे मिलीं वरदान! प्रिये॥

मुस्कान तुम्हारी है! रूपसि,
मुझको सम्मोहित करती है।
तेरी चितवन की एक झलक,
मेरी सुध-बुध को हरती है।
तेरा अल्हड़ औ' बाँकापन,
मुझको मदमस्त बनाता है।
जब लहरा कर तुम चलती हो,
तब हृदय मेरा खिल जाता है।

मैं मुक्तकण्ठ से कहता हूं, तुम सचमुच बड़ी महान!
जप, जोग, तपस्या के बल पर, तुम मुझे मिली वरदान

'सत्यम् शिवम् सुंदरम्' की पैरो...

लूटम्—फूटम्—गड़बड़म्
स्वार्थ सत्य, परमार्थ असत्यम्, स्वार्थ ही सुन्द...
आपस की तू तू—मैं मैं, संसद के अन्दर
(उपरोक्त पंक्तियां अलाप शैली में गा...

लूट रेल में, लूट मेल में, लूट दौड़ती बस में
बी०ए० पास लुटेरे भगवन, लूट भरी नस-नस में
पुलिस चूमती चरणम्। लूटम् फूटम् गड़बड़म्॥

निर्भय हो, डाकू दल घूमें, दिन में डालें डा...
दिल्ली की किल्ली ढिल्ली है, क्या कर सकते क...
जाएं किसकी शरणम्? लूटम् फूटम्.........

पदलिप्सा में लिप्त महाप्रभु, कैसे छोड़ें सत्ता,
कोई न पूछे दो कौड़ी को, कट जाता जब पत्ता
उचित लड़ाई झगड़म्। लूटम् फूटम्......॥

जैसी है यह डेमोक्रैसी, कभी न देखी ऐसी,
जनता द्वारा, जनता की होती है ऐसी तैसी
बिना मौत ही मरणम्। लूटम् फूटम्......॥
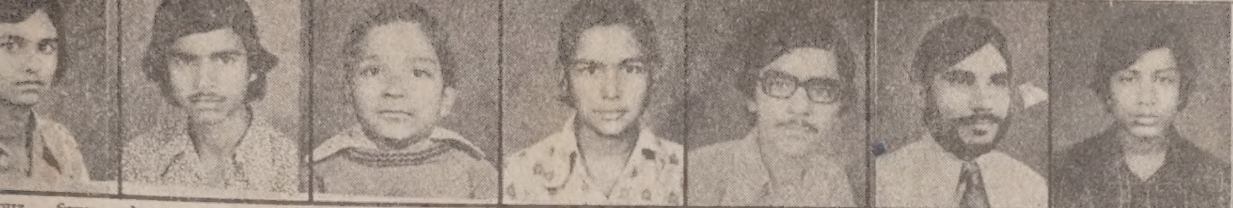
काका

...मार मित्तल, ... शाही मोहल्ला ... नगर शाहदरा, ...ल्म देखना और ...।

सुरेश पाल, गली नम्बर २२, कमालपुर, होशियारपुर, (पंजाब), १८ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, गाने गाना, बाजा बजाना।

अनिल कुमार गोयल, ४८ जानकी नगर, इन्दौर, ८ वर्ष, डींग हांकना, सारे पतंग उड़ाना, आकाश में दिन में तारे देखना।

देवेन्द्र कुमार शर्मा, एम० २/४८, माडल टाउन, मोहन पार्क, दिल्ली, १४ वर्ष, बड़ों का आदर करना, पिक्चर देखना।

मोहन कुमार चुघ, प्री०-इंजी०, मकान नम्बर जी०२६/१२ पवन कुटीर, जहाज पुल, हिसार, १८ वर्ष, पढ़ना, बैडमिन्टन खेलना।

महेन्द्र सैनी, ४३१६ आर्यपुरा, चौक माता मंदिर, रोशनारा रोड, नई दिल्ली, २६ वर्ष, साईकिल पर भारत की यात्रा करना, दृश्य देखना।

उमेश कुमार अग्रवाल, ११८ आर० एन० टी० मार्ग, इन्दौर (म० प्र०), १७ वर्ष, गाड़ी तेज चलाना, पत्र-मित्रता करना, सिनेमा देखना।

...सिंह, ए० ७/३२ ...नाला, शागामर्मी, ...न से प्यार करना, ...ना, पत्र-मित्रता ...-टिकट संग्रह।

हरिशंकर खण्डेलवाल, १०५३ शिव भंडार फूल चौक महू, (म० प्र०), २० वर्ष, पत्र-मित्रता करना, फिल्म देखना, सबको आदर देना।

आलोक गुप्ता, सी०/११, सिघनाथ एण्ड कं०, ४६/७७ खोया बाजार, कानपुर, १५ वर्ष, विश्व का महान लेखक बनना, सेवा करना।

विष्णु कुमार सिंह, मकान नम्बर २६६६, गली दर्जी वाली, मस्जिद खजूर, दिल्ली, १६ वर्ष, मीर हरगन बजाना और सबको सुनाना।

ताराचन्द खण्डेलवाल, प्लाट नम्बर-१४३, दादा बाड़ी शास्त्री नगर कोटा, १८ वर्ष, पढ़ना और वालीबाल खेलना, हंसना-हंसाना।

हरीशचन्द्र, १२२/५२१ सिंधु नगर कानपुर, १६ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, टिकट संग्रह, देश की पूरी तरह से सेवा करना।

अशोक कुमार, फंड बाजार, पठानों की मस्जिद के पास बीकानेर, १५ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, हंसना और दूसरों को हंसाना।

...कुमार अग्रवाल, ...पाल गुप्त, २८६ ...न्दशहर, १७ वर्ष, ...नए दोस्त बनाना ...करना।

इन्द्र राज 'आनन्द' निकासा रोड, विदिशा, २१ वर्ष, पत्र पत्रिकायें पढ़ना, दूसरों की बात काटना एवं दूसरों की सहायता करना।

आशु तोष बनर्जी, १२३६ मोन्टू हाता सिविल लाइन्स झांसी, १६ वर्ष, चित्रकारी करना, चित्रकथाएं बनाना, सैर करना।

नरेन्द्रकुमार महेश्वरी ६/१८० फाटक सूरज भान बेलन गंज आगरा, १७ वर्ष, मित्रता करना, फिल्म देखना, स्वास्थ्य का ध्यान रखना।

शिवनारायण गिरी, चटपा जिला डिबरुगढ़ (असम), २२ वर्ष, कहानी लिखना, दूसरों की सुनना और अपनी कहना।

चन्द्रकुमार एम० जाजोदिया हार्वे सभापति कम्पाउण्ड, अमरावती, (महाराष्ट्र), १८ वर्ष, पढ़ना, पत्र-मित्रता करना।

अशोक कुमार साव, महाबीर स्थान रोड, झरिया, जिला धनबाद, १८ वर्ष, पढ़ना और अच्छे मित्र से दोस्ती करना, सुखी रहना।

...ा देवस, जोशी ...गेट होशियारपुर, ...-पत्रिकायें पढ़ना, ..., मित्रता करना,

सुरेन्द्र कुमार गुगलानी, वेणु [illegible] सिरसा (हरियाणा), [illegible] पढ़ना, दिल से प्यार करना, मित्र बनाना, दुःख सहन करना।

शैलेश कुमार जैन, श्री पूनमा भाई जैन, तिलक वार्ड दाल मिल, पिपरिया (म० प्र०), १८ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, क्रिकेट खेलना।

शम्मी मल्होत्रा, ब्लाक नम्बर १, मकान नम्बर ८/२ गोविन्द नगर, कानपुर, १६ वर्ष, पत्र-मित्रता करना और खेलना।

अलीकुर रहमान, ४६२, मटिया महल, जामा मस्जिद दिल्ली, १७ वर्ष, फुटबाल खेलना, गप्पें मारना और झूठ बोलना।

सुनील कुमार खन्ना, ब्लाक नम्बर २, मकान नम्बर १३/१३, गोविन्द नगर, कानपुर, १६ वर्ष, पढ़ना, सारे देश का भ्रमण करना।

-रवि शंकर सहाय छोटू, छोटी खगोल, कायस्त टोली, पो० खगोल, जिला पटना (बिहार), १७ वर्ष, गेंद खेलना।

...गोड़िया, भारत ... पटना सिटी, ...ट जमा करना, ..., फिल्म देखना ...।

सुभाष भाकुनी, मकान नम्बर ५०, पुराना महानगर लखनऊ, १७ वर्ष, लड़कों को चिढ़ाना, पिकनिक मनाना, दादागीरी दिखाना।

अनिल कुमार वर्मा, गुरुद्वारा रोड, आशु शिव मंदिर के पास वर्मा कुजोज, १७ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, दूर-दूर की सैर करना।

सोहन रामजीदास खत्री, एम० ए०, सदर चौक, सुखराम हाल के पास यवतमाल, २५ वर्ष, फर्माइश भेजना, हाकी खेलना।

जहीर उद्दीन अमरोही, महाराम बिल्डिंग पहला मालाग्रेट रोड, बम्बई, २० वर्ष, पढ़ना, दोस्ती करना, भलाई के काम करना।

दीवाना फ्रेंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रेंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिए जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित कर दिया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

हमारा पता : दीवाना फ्रेंड्स क्लब
८-ब बहादुरशाह जफर मार्ग नई दिल्ली-११०००२
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ______

पता ______

आयु ______ शौक ______

...बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।

साप्ताहिक भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

१६ नवम्बर से २२ नवम्बर ७८ तक

मेष : इस सप्ताह में कुछ उतार-चढ़ाव आयेंगे और संघर्ष भी काफी रहेगा, व्यापारिक क्षेत्र में सुधार होगा और लाभ भी बढ़ेगा, परन्तु आप व्यर्थ की समस्याओं में घिरे रहेंगे, परेशानी भी होगी।

वृष : सप्ताह के अंतिम दिन आर्थिक दृष्टि से लाभप्रद रहेंगे, रुका हुआ पैसा मिलेगा, स्थाई साधनों से भी धन लाभ होगा, बीच में कठिनाईयां भी आती रहेंगी, फिर भी हालात सुधरेंगे, सफलता प्राप्त होगी।

मिथुन : इन दिनों विगत समय में किए कामों के परिणाम मिलते रहेंगे. आर्थिक सफलता मिलेगी, लाभ भी अच्छा होगा, नई योजना पर व्यय अधिक परन्तु बाद में लाभ भी होता रहेगा।

कर्क : कठिनाईयां बनी रहेंगी फिर भी आर्थिक एवं व्यापारिक दृष्टिकोण से सप्ताह उत्तम रहेगा, सुधार की नई योजनाएं बनेंगी, किसी नजदीकी नातेदार से विगाड़ या परेशानी, विरोधिता बिना कारण ही होती रहेगी।

सिंह : सेहत की ओर विशेष ध्यान दें, शारीरिक कष्ट या चोट लगने का भय है, यात्रा सावधानी से करें, मिले-जुले फल प्राप्त होते रहेंगे, कोई विशेष काम बन जावेगा, संघर्ष काफी आयेंगे।

कन्या : किसी प्रभावशाली पुरुष के सहयोग एवं परामर्श से वातावरण एवं हालात में सुधार होगा, पुरानी उलझनों से छुटकारा पायेंगे, सप्ताह अच्छा है, यात्रा भी हो सकती है, धर्म में रुचि, थकावट का प्रभाव रहेगा।

तुला : इस सप्ताह के दौरान बीते समय में किए कामों के परिणाम मिलते रहेंगे, परिचय करने पर अधूरे पड़े कार्य पूरे हो जायेंगे, लाभ भी बढ़ेगा, कामकाज में सुधार होगा, झगड़े मे बचें वरना परेशानी बढ़ सकती है।

वृश्चिक : घरेलू हालात से कुछ चिन्ता, कुछ नई उलझनों के पैदा होने से परेशानी बढ़ेगी, फिर भी हालात आपके नियंत्रण में ही रहेंगे, सप्ताह भी अच्छा रहेगा, मित्र सहयोग देंगे, सरकारी कामों में सफलता, लाभ बढ़ेगा।

धनु : यह सप्ताह पर्याप्त अच्छा रहेगा, कामकाज में सुधार एवं नई योजना से भी लाभ हो सकता है, व्यय अधिक जो घरेलू वस्तुओं की खरीद पर अधिक होगा, कोई बिगड़ा काम बन जावेगा, परिश्रम सफल रहेगा।

मकर : विगत समय में किए कामों के शुभ अशुभ मिश्रितफल मिलते रहेंगे, आर्थिक स्थिति में परिवर्तन होता रहेगा, दौड़-धूप अधिक रहेगी. प्रयत्न करने पर सफलता मिलेगी, सुधार होता दिखाई देगा, लाभ में वृद्धि होगी।

कुम्भ : घरेलू खर्च में वृद्धि होगी. व्यापारिक हालात पहले से ठीक चलेंगे परन्तु लाभ कुछ देरी से मिलेगा, सप्ताह संघर्षपूर्ण भी है और दिलचस्प भी. सरकारी कामों में सफलता, परेशानी भी काफी होगी परिवार से सुख।

मीन : आय में वृद्धि परन्तु मिलने में बाधा या देर से मिलेगी, नातेदारों से परेशानी, घर पर क्लेश बिना कारण हो. किसी प्रभावशाली पुरुष के परामर्श से काम सिद्ध हो सकेंगे. यात्रा सफल. कोई अधूरा काम पूरा होगा।

सुलक्षणा पण्डित

—विजय भारद्वाज

फिल्म उद्योग की सुन्दर, चंचल, मधुर भाषी और बिंदास अभिनेत्रियों में सुलक्षणा पंडित का नाम भी गिना जाता है। इन्होंने फिल्मउद्योग में प्रवेश एक गायिका के रूप में किया था लेकिन सफल गायिका की उपाधि प्राप्त करने से पहले ही इन्होंने अपनी मंडली बदल दी और नई राह पकड़ ली।

वह नई राह थी अभिनय की। सुलक्षणा सिर्फ आवाज की ही सुलक्षणा नहीं थी अपितु रूप-सौंदर्य और यौवन के हिसाब-किताब से भी परिपूर्ण थी ! अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण इन्होंने नायिका बनने का फैसला कर लिया।

सुलक्षणा ने एक हद तक गीतों की दुनिया में भी नाम पैदा किया और किशोर कुमार की जोड़ी की गायिका जानी गई। अभिनय पात्र में इन्हें कई उतार-चढ़ाव देखने पड़े। लेकिन लगन की पक्की यह अभिनेत्री अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर रही ! पिछले कुछ महीनों पहले फिल्म 'अपनापन' [illegible] हुई और सुलक्षणा के अभिनय की चार[illegible] धूम मच गई। इससे पहले भी इन्होंने [illegible] भूमिकायें निभाईं, लेकिन 'अपनापन' [illegible] की सबसे सफलतम फिल्मों में गिनी [illegible] है। इस फिल्म में जितेन्द्र की दूसरी प[illegible] रूप में सुलक्षणा ने लाजवाब अभिनय [illegible] है।

आने वाली फिल्म 'आरपार' [illegible] इनकी यादगार भूमिका है ! इस फि[illegible] निर्देशक हैं शाही माथुर और कला[illegible] अभिताभ, शशिकपूर, जितेन्द्र और सु[illegible] पंडित फिर 'असली नकली' में यह [illegible] निश्चल की जोड़ीदार बनी हैं। इस [illegible] से भी काफी उम्मीदें हैं। इनकी तीसर[illegible] वाली चर्चित फिल्म है 'गुल्ले बकावली' [illegible] यह फिरोज खान और अमजद खा[illegible] कुशल कलाकारों के साथ दिखाई देंगी।

आज सुलक्षणा पण्डित व्यस्त सित[illegible] गिनी जाती हैं और बेहतरीन कलाकार[illegible] इसमें कोई दो राय नहीं। इनकी आने[illegible] फिल्में और भी ऊंचाइयों को छुयेंगी [illegible] उम्मीद है।